मासिक हिन्दी

विश्वनाथ समाचार

RNI No. MPHIN/25/A4357

'जनता की सोच — जनहित की खोज'

vishwanathsamachar@gmail.com

वर्ष 1 अंक 8 | इंदौर, बुधवार (15 जुलाई 2026 से 14 अगस्त 2026 तक) | पृष्ठ 8, मूल्य 5 रुपया

अनमोल वचन

'जीवन का वास्तविक सौंदर्य बाहरी वैभव में नहीं, बल्कि मन की पवित्रता, श्रेष्ठ विचारों और निष्काम सेवा में निहित है। जो स्वयं को जीत लेता है, वही सच्चे अर्थों में विजयी होता है।'

– परम पूज्य आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी अवधेशानंद गिरि जी महाराज

प्रदेश के बुनियादी ढांचे और जन-कल्याण के लिए 10 हजार 800 करोड़ रूपये की स्वीकृति

टेक-होम राशन के उत्पादन एवं प्रदाय की व्यवस्था महिला एवं बाल विकास विभाग को हस्तांतरित किये जाने का निर्णय

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की अध्यक्षता में मंत्रि-परिषद की बैठक मंगलवार को मंत्रालय में सम्पन्न हुई। मंत्रि-परिषद की बैठक में मध्यप्रदेश के बुनियादी ढांचे और जन-कल्याण के लिए 10 हजार 800 करोड़ रुपये के विभिन्न विकास प्रस्तावों को मंजूरी दी गई। राज्य सरकार ने शहरों के कायाकल्प के लिए नगरीय अधोसंरचना विकास मद में 8 हजार 445 करोड़ रुपये की राशि स्वीकृत की है। इसके साथ ही कैबिनेट ने किसानों के हित में मूंग उपार्जन के लिए 1,587 करोड़ रुपये की नि:शुल्क शासकीय प्रत्याभूति और सिंचाई सुविधाओं के विस्तार के लिए कुण्डलिया परियोजना को निरंतर रखने जैसे कई दूरगामी और ऐतिहासिक निर्णयों पर मुहर लगायी है। मंत्रि-परिषद ने राजगढ़ में जल संसाधन विभाग की कुण्डलिया वृहद सिंचाई परियोजना को 16वें केन्द्रीय वित्त आयोग की अवधि 1 अप्रैल 2026 से 31 मार्च 2031 तक निरन्तर संचालन के लिए 245 करोड़ 45 लाख रूपये की स्वीकृति दी है। राजगढ़ जिले में निर्मित यह एक वृहद सिंचाई परियोजना है।



परियोजना का मुख्य उद्देश्य बांध निर्माण कर सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली के माध्यम से राजगढ़ और आगर-मालवा जिले के 1,39,600 हैक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई क्षमता विकसित करना है। मंत्रि-परिषद ने रबी वर्ष 2023-24 विपणन वर्ष 2024-25 में भारत सरकार की प्राईस सपोर्ट स्कीम अन्तर्गत लक्ष्य से अधिक उपार्जित मूंग के लिए 1,587 करोड़ रूपये की नि:शुल्क शासकीय प्रत्याभूति उपलब्ध कराए जाने का निर्णय लिया है। निर्णय अनुसार पंजाब नेशनल बैंक से ली गई साख सीमा में 19 जुलाई 2026 से 18 जनवरी 2027 तक 6 माह की अवधि के लिए शेष राशि 396 करोड़ रूपये की नि:शुल्क शासकीय प्रत्याभूति और भारतीय स्टेट बैंक से ली गई साख सीमा में 3 जुलाई 2026 से 2 जुलाई 2027 तक 1 वर्ष की अवधि के लिए शेष राशि 1,191 करोड़ रूपये की नि:शुल्क शासकीय प्रत्याभूति उपलब्ध कराई जायेगी। मंत्रि-परिषद ने टेक-होम राशन के उत्पादन एवं प्रदाय की व्यवस्था मध्यप्रदेश राज्य आजीविका फोरम से वापस लेते हुए महिला एवं बाल विकास विभाग को तत्काल हस्तांतरित किये जाने का निर्णय लिया है। तत्कालिक रूप से अन्तरिम व्यवस्था के रूप में स्व सहायता समूह से पूरक पोषण आहार प्रदाय के लिए विभाग को अधिकृत किया गया है।

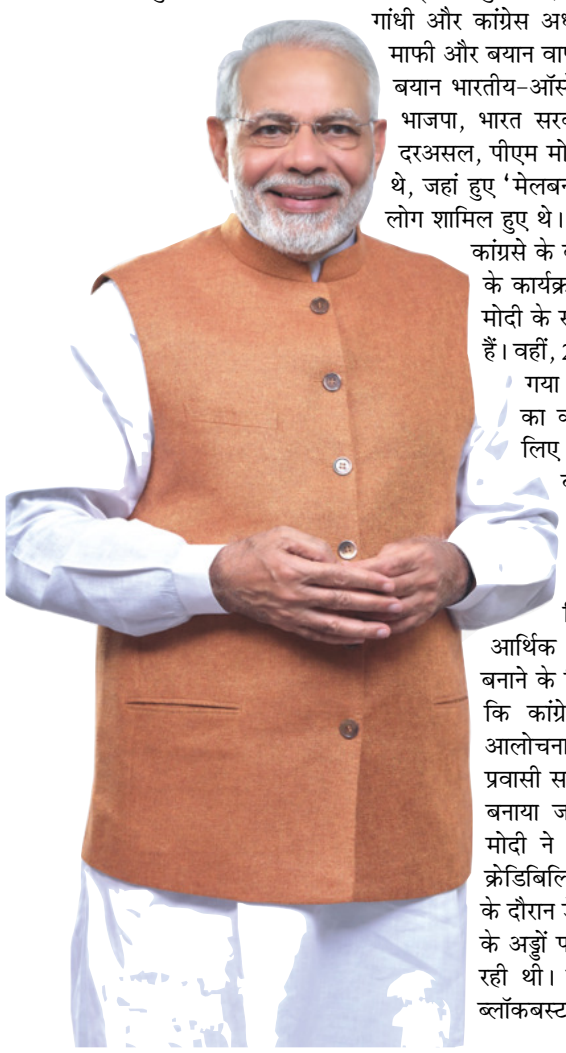
वाणिज्यिक कर विभाग के कार्यालय संचालन के लिए 521 करोड़ 4 लाख रुपये की स्वीकृति

मंत्रि-परिषद ने वाणिज्यिक कर विभाग के अंतर्गत संचालित तीन स्थापना योजनाओ को आगामी 5 वर्षों की अवधि यानि वित्तीय वर्ष 2026-27 से वर्ष 2030-31 तक के लिए निरंतर संचालन के लिए कुल राशि 521 करोड़ 4 लाख रुपये की स्वीकृति दी है। स्वीकृति अनुसार मुख्यालय संचालन के लिए 60 करोड़ 81 लाख रूपये जिला कार्यालय संचालन के लिए 434 करोड़ 81 लाख रूपये और परिक्षेत्रीय कार्यालय के संचालन के लिए 25 करोड़ 42 लाख रूपये स्वीकृत किए गए है। इन योजनाओं के तहत कर्मचारियों के वेतन-भत्ते, कार्यालय व्यय, व्यावसायिक सेवाओं का भुगतान और मशीन/फर्नीचर/वाहनों का संधारण किया जाता है।

ऑस्ट्रेलिया में मोदी के कार्यक्रम पर विवाद

आयोजकों ने कहा- पैसे देकर लोगों को नहीं बुलाया

नई दिल्ली। पीएम मोदी के मेलबर्न में हुए 'मेलबर्न मीट्स मोदी' कार्यक्रम पर आयोजकों ने कहा कि इस कार्यक्रम में आने के लिए लोगों को पैसे नहीं दिए गए थे। इससे पहले कांग्रेस नेता पवन खेड़ा ने सोशल मीडिया पर एक वीडियो पोस्ट करते हुए आरोप लगाया था कि 9 जुलाई को हुए इस कार्यक्रम में लोगों को पैसे देकर चार्टर्ड प्लेन से बुलाया गया था। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, कार्यक्रम के आयोजकों ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी और कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे को लेटर लिखकर माफी और बयान वापस लेने की मांग की है। उन्होंने कहा कि ऐसा बयान भारतीय-ऑस्ट्रेलियाई समुदाय का अपमान है। इसका खर्च भाजपा, भारत सरकार या ऑस्ट्रेलिया सरकार ने नहीं उठाया। दरअसल, पीएम मोदी 9 और 10 जुलाई को ऑस्ट्रेलिया दौरे पर थे, जहां हुए 'मेलबर्न मीट्स मोदी' कार्यक्रम में करीब 30 हजार लोग शामिल हुए थे। 11 जुलाई को कांग्रसे नेता पवन खेड़ा समेत कांग्रसे के कई नेताओं ने सोशल मीडिया पर पीएम मोदी के कार्यक्रम एक एक वीडियो शेयर कर लिखा था कि मोदी के स्वागत के लिए भाड़े पर एनआरआई लाए गए हैं। वहीं, 25-30 हजार लोगों को पैसे देकर यहां बुलाया गया था। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, आयोजकों का कहना है कि चार्टर्ड फ्लाइट की व्यवस्था के लिए महीनों तक योजना बनाई गई। इसके लिए बातचीत, यात्रियों का समन्वय और प्रशासनिक काम किए गए। कई स्वयंसेवकों ने अपने परिवार के साथ समय बिताने का मौका छोड़ा, अपने कारोबार और पेशेवर जिम्मेदारियों से समय निकाला, व्यक्तिगत आर्थिक जोखिम उठाया और इस पहल को सफल बनाने के लिए लगातार काम किया। आयोजकों ने कहा कि कांग्रेस को प्रधानमंत्री मोदी और भाजपा की आलोचना करने का पूरा अधिकार है, लेकिन भारत के प्रवासी समुदाय की लोकतांत्रिक पसंद को निशाना नहीं बनाया जाना चाहिए। मेलबर्न मीट्स मोदी में पीएम मोदी ने कहा था कि हमारे फार्मा और डिफेंस की क्रेडिबिलिटी दुनिया देख रही है। आपने ऑपरेशन सिंदूर के दौरान डेमो तो देख ही लिया होगा। धमाके आतंकियों के अड्डों पर हो रहे थे और गूंज पूरी दुनिया में सुनाई दे रही थी। उन्होंने आगे कहा कि ये शो हाउसफुल है, ब्लॉकबस्टर है।



सुप्रीम कोर्ट का 3 लैंग्वेज पॉलिसी पर रोक से इनकार

कहा- कोई भी भाषा सीखना कभी बेकार नहीं जाता

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को सेंट्रल बोर्ड ऑफ सेकेंडरी एजुकेशन (सीबीएसई) की थ्री-लैंग्वेज पॉलिसी पर रोक लगाने से इनकार कर दिया। यह पॉलिसी मौजूदा 2026-27 सत्र से लागू कर दी गई है। चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया सूर्यकांत, जस्टिस जॉयमाल्य बागची और जस्टिस वी. मोहना की बेंच अब इस मामले में बुधवार को सुनवाई करेगी। याचिकाकर्ताओं ने अपनी अपील में कहा कि नई पॉलिसी के अनुसार, छात्रों को दो भारतीय भाषाएं पढ़नी होंगी। उन्हें वे भाषाएं छोड़नी पड़ेंगी, जिन्हें वे



क्लास 5 से लगातार पढ़ रहे हैं। इसके अलावा इसमें अंग्रेजी को 'गैर-मूल' भाषा माना गया। साथ ही मूल भाषाओं के लिए शिक्षकों और पाठ्यपुस्तकों की उपलब्धता पर चिंता जताई। सीबीएसई ने 15 मई को एकेडमिक सेशन 2026-27 से थ्री लैंग्वेज पॉलिसी लागू करने का सर्कुलर जारी किया था।

ऑपरेशन सिंदूर के बाद 10 लाख करोड़ की डिफेंस डील

नई दिल्ली। ऑपरेशन सिंदूर के बाद भारत की रक्षा खरीद का पैटर्न तेजी से बदला है। पिछले 14 महीनों में मंजूर रिकॉर्ड प्रस्तावों से संकेत मिलता है कि सेना को अब सिर्फ सीमित जवाबी कार्रवाई के लिए नहीं, बल्कि लंबी और मल्टीलेवल वॉर के लिए तैयार किया जा रहा है। डिफेंस एक्विजिशन काउंसिल ने संघर्ष के बाद से 55 प्रस्तावों को मंजूरी दी, जिनकी कुल कीमत 9.80 लाख करोड़ रुपए से ज्यादा है। यह रकम एक साथ खर्च नहीं होगी,



बल्कि कई साल में अलग-अलग सौदों, निर्माण कार्यक्रमों और आधुनिकीकरण योजनाओं पर लगेगी। तैयारी की पहली वजह ये है कि युद्ध छिड़ना अब सामान्य बात होती जा रही है।

बंगाल की खाड़ी में 9 मछुआरों के शव मिले

कोलकाता। पश्चिम बंगाल के दक्षिण 24 परगना के पास बंगाल की खाड़ी में डूबे एक ट्रॉलर से आठ दिन बाद नौ मछुआरों के शव बरामद किए गए हैं। छह मछुआरे अब भी लापता हैं और उनकी तलाश जारी है। 'जय मां काली' नाम का ट्रॉलर 2 जुलाई को पूर्व मेदिनीपुर जिले के शंकरपुर मछली बंदरगाह से 15 मछुआरों को लेकर समुद्र में मछली पकड़ने निकला था। 6 जुलाई के बाद ट्रॉलर से संपर्क टूट गया था। अधिकारी ने बताया कि समुद्र में कई दिन रहने के कारण शव बुरी तरह सड़ चुके हैं और उनकी पहचान करना मुश्किल है।

श्रावण मास की तैयारियां पूरी, बिना प्रोटोकॉल कतार से होंगे बाबा विश्वनाथ के दर्शन

खाली पेट कतार में न लगने की अपील, मोबाइल-बैग सहित प्रतिबंधित वस्तुओं के साथ प्रवेश नहीं मिलेगा



विश्वनाथ समाचार न्यूज नेटवर्क

वाराणसी। श्री काशी विश्वनाथ धाम में आगामी श्रावण मास-2026 की तैयारियों को अंतिम रूप दे दिया गया है। मंडलायुक्त एस. राजलिंगम एवं पुलिस आयुक्त मोहित अग्रवाल की अध्यक्षता में हुई उच्चस्तरीय बैठक में श्रद्धालुओं की सुरक्षा, सुगम दर्शन, भीड़ प्रबंधन तथा मूलभूत सुविधाओं की विस्तृत समीक्षा की गई। इस वर्ष श्रावण मास 30 जुलाई से प्रारंभ होकर 28 अगस्त (रक्षाबंधन) तक चलेगा। बैठक में जिलाधिकारी सत्येंद्र कुमार सहित मंदिर न्यास, पुलिस, प्रशासन, स्वास्थ्य, सीआरपीएफ, एनडीआरएफ एवं अन्य विभागों के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे। बैठक में पेयजल, चिकित्सकीय सुविधा, भीड़ नियंत्रण, पार्किंग, साफ-सफाई, सुरक्षा, सीसीटीवी, विद्युत व्यवस्था और पीए सिस्टम को पूरी क्षमता के साथ संचालित करने के निर्देश दिए गए। धाम के बाहर गलियों में लटक रहे बिजली के तारों को सुरक्षित रूप से ऊपर कराने के भी निर्देश दिए गए।

मंदिर प्रशासन ने बताया कि पिछले वर्षों की तुलना में इस बार भीड़ प्रबंधन को और प्रभावी बनाया गया है। जिग-जैग रेलिंग पर दोनों ओर अतिरिक्त बैरिकेडिंग की जा रही है, जबकि कतार में लगे श्रद्धालुओं को गर्मी और उमस से राहत देने के लिए इंडस्ट्रियल एयर कूलर लगाए जाएंगे। पूरे धाम क्षेत्र में नियमित अंतराल पर शीतल पेयजल, ओआरएस तथा चिकित्सा दल उपलब्ध रहेंगे।

चार सोमवार, चार विशेष श्रृंगार

श्रावण मास के चारों सोमवार को बाबा विश्वनाथ का विशेष श्रृंगार होगा। 3 अगस्त को श्री शंकर स्वरूप, 10 अगस्त को गौरी-शंकर, 17 अगस्त को अर्धनारीश्वर तथा 24 अगस्त को रुद्राक्ष श्रृंगार किया जाएगा। 27 अगस्त (पूर्णिमा) को झूला श्रृंगार एवं 28 अगस्त (रक्षाबंधन) को सामान्य दर्शन होंगे।

प्रोटोकॉल दर्शन पर पूर्ण प्रतिबंध

श्रावण मास के दौरान किसी भी प्रकार के विशेष या प्रोटोकॉल दर्शन की अनुमति नहीं होगी। मंदिर प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि सभी श्रद्धालुओं को केवल सामान्य कतार से ही दर्शन करने होंगे। किसी भी प्रकार की सिफारिश अथवा विशेष दर्शन के नाम पर धन मांगने वालों से सावधान रहने और तत्काल पुलिस अथवा मंदिर कर्मियों को सूचना देने की अपील की गई है।

मोबाइल, स्मार्ट वॉच और बैग लेकर न आएं

श्रद्धालुओं को सलाह दी गई है कि वे मोबाइल फोन, स्मार्ट वॉच, ईयरफोन, बड़े बैग, धातु की वस्तुएं, पेन, तंबाकू, नशीले पदार्थ तथा अन्य प्रतिबंधित सामान अपने होटल, घर या धर्मशाला में ही छोड़कर आएं। अत्यधिक भीड़ को देखते हुए इस बार नि:शुल्क बैगेज काउंटर संचालित नहीं किए जाएंगे।

खाली पेट कतार में न लगें

मंदिर प्रशासन ने विशेष अपील जारी करते हुए कहा है कि अधिक भीड़ के कारण दर्शन में समय लग सकता है। ऐसे में श्रद्धालु खाली पेट कतार में न लगें और पर्याप्त पानी व आवश्यक भोजन करने के बाद ही दर्शन के लिए आएं, ताकि स्वास्थ्य संबंधी परेशानी से बचा जा सके।

सात प्रवेश मार्ग, छह खोया-पाया केंद्र

श्रद्धालुओं के लिए गेट नंबर-4, काशी द्वार (4बी), नंदू फेरिया, सिल्को, ढुंढिराज, सरस्वती फाटक तथा भैरव द्वार सहित सात प्रमुख प्रवेश मार्ग निर्धारित किए गए हैं। हालांकि गंगा के बढ़ते जलस्तर की स्थिति में मंदिर घाट की ओर से प्रवेश अस्थायी रूप से बंद किया जा सकता है। भीड़ के दौरान मंदिर परिसर, शंकराचार्य चौक, गेट नंबर-1, गेट नंबर-2, गेट नंबर-4 तथा मंदिर घाट पर खोया-पाया केंद्र स्थापित किए जाएंगे।

वृद्ध और दिव्यांग श्रद्धालुओं को विशेष सुविधा

वृद्ध, अशक्त, दिव्यांग एवं छोटे बच्चों के लिए गोदौलिया से मैदागिन तक नि:शुल्क गोल्फ कार्ट सेवा उपलब्ध रहेगी। धाम में चिकित्सा दल, एंबुलेंस, ओआरएस, ग्लूकोज, बिस्किट, टॉफी, चॉकलेट, पेयजल एवं अन्य आवश्यक सुविधाएं भी उपलब्ध रहेंगी। संपूर्ण धाम क्षेत्र तथा गोदौलिया से मैदागिन तक केंद्रीयकृत पीए सिस्टम के माध्यम से लगातार आवश्यक सूचनाएं प्रसारित की जाएंगी।

महाकाल की सवारी की तैयारियां तेज, श्रद्धालुओं की सुविधा पर रहेगा विशेष फोकस

विश्वनाथ समाचार न्यूज नेटवर्क

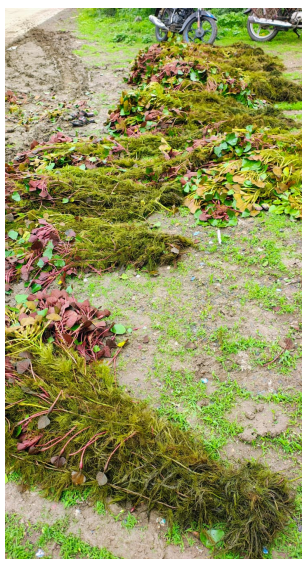


उज्जैन। श्रावण-भादौ मास में निकलने वाली भगवान श्री महाकालेश्वर की पारंपरिक सवारियों को लेकर प्रशासन ने तैयारियां अंतिम चरण में पहुंचा दी हैं। कलेक्टर एवं श्री महाकालेश्वर मंदिर प्रबंध समिति के अध्यक्ष रोशन कुमार सिंह की अध्यक्षता में मंदिर परिसर स्थित सभाकक्ष में हुई समीक्षा बैठक में श्रद्धालुओं की सुविधा, सुरक्षा और व्यवस्थित दर्शन को सर्वोच्च प्राथमिकता देने का निर्णय लिया गया। बैठक में सवारी मार्ग, दर्शन व्यवस्था, यातायात, चिकित्सा, सुरक्षा, सफाई, बिजली और सांस्कृतिक कार्यक्रमों सहित सभी व्यवस्थाओं की विस्तृत समीक्षा की गई। इस वर्ष श्रावण मास में चार तथा भादौ मास में दो सवारियां निकाली जाएंगी। प्रथम सवारी 3 अगस्त को, जबकि अंतिम राजसी (शाही) सवारी 7 सितंबर को निकलेगी। भगवान महाकाल की सवारी परंपरागत मार्ग से नगर भ्रमण करते हुए रामघाट पहुंचेगी, जहां पूजन-अर्चन के बाद निर्धारित मार्ग से पुन: मंदिर पहुंचेगी। शाही सवारी में अतिरिक्त मार्ग से नगर भ्रमण कराया जाएगा। बैठक में निर्णय लिया गया कि पिछले वर्ष की तरह इस बार भी प्रत्येक सवारी के साथ जनजातीय सांस्कृतिक दलों की प्रस्तुतियां, आकर्षक झांकियां और निर्धारित थीम आधारित आयोजन होंगे। श्रद्धालुओं को सवारी के बेहतर दर्शन कराने के लिए प्रत्येक सवारी में पांच एलईडी रथ शामिल किए जाएंगे। श्रावण महोत्सव एवं सांस्कृतिक संध्याओं का भी आयोजन किया जाएगा। श्रावण-भादौ मास के दौरान भस्म आरती के समय में भी परिवर्तन रहेगा। 30 जुलाई से 7 सितंबर तक मंदिर के पट प्रतिदिन प्रात: 3 बजे खुलेंगे, जबकि सोमवार को भस्म आरती सुबह 2.30 बजे से प्रारंभ होगी। दर्शन व्यवस्था को अधिक सुव्यवस्थित बनाने के लिए सामान्य दर्शन का प्रवेश त्रिवेणी संग्रहालय, महाकाल महालोक, मानसरोवर भवन और फेसिलिटी सेंटर से रहेगा। वहीं शीघ्र दर्शन के लिए द्वार क्रमांक 1 एवं 5 से विशेष व्यवस्था की जाएगी। श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए सात स्थानों पर जूता स्टैंड तथा छह प्रमुख स्थानों पर पार्किंग की व्यवस्था भी रहेगी। श्रावण मास में आने वाले कांवड़ यात्रियों के लिए विशेष प्रबंध किए गए हैं। मंगलवार से शुक्रवार तक कांवड़ दलों को जल अर्पण की अनुमति रहेगी, जबकि शनिवार, रविवार और सोमवार को अत्यधिक भीड़ के कारण कांवड़ दलों के प्रवेश की अनुमति नहीं होगी।

बनेड़िया तालाब में सिंघाड़े की रोपाई शुरू, अच्छी बारिश पर टिकी भोई समाज के किसानों की उम्मीदें

विश्वनाथ समाचार न्यूज नेटवर्क

देपालपुर। मानसून की धीमी शुरुआत के बावजूद बनेड़िया के स्थानीय तालाब में भोई समाज के किसान सिंघाड़े की खेती की तैयारियों में जुट गए हैं। तालाब में अभी सीमित मात्रा में ही पानी है, लेकिन किसान जोखिम उठाकर सिंघाड़े की रोपाई कर रहे हैं। उनका कहना है कि यदि मौसम ने साथ दिया और पर्याप्त वर्षा हुई तो फसल अच्छी होगी, अन्यथा नुकसान उठाना पड़ेगा। भोई समाज के किसानों ने बताया कि हर वर्ष मानसून के दौरान तालाब में पानी भरने के बाद सिंघाड़े की खेती की जाती है। इसके लिए भोपाल, धार सहित अन्य स्थानों से करीब 10 रुपये प्रति रोप की दर से सिंघाड़े के रोप खरीदकर लाए जाते हैं। रोप लाने में परिवहन खर्च अलग से आता है, वहीं रास्ते में कई रोप खराब भी हो जाते हैं। इसके बावजूद परिवारों की आजीविका का प्रमुख साधन होने के कारण किसान हर साल यह जोखिम उठाते हैं। समाजजनों ने बताया कि तालाब में खेती के लिए वर्षों से अलग-अलग स्थान निर्धारित हैं, जहां किसान सिंघाड़े के साथ शक्करबट्टी की भी खेती करते हैं।



इस वर्ष शक्करबट्टी की फसल से अपेक्षित लाभ नहीं मिल पाया, इसलिए अब किसानों को सिंघाड़े की खेती से नुकसान की भरपाई की उम्मीद है।

अंगूठे में फंसाकर पानी के भीतर लगाई जाती है बेल

किसानों ने बताया कि सिंघाड़े की खेती का तरीका सामान्य फसलों से बिल्कुल अलग होता है। बेल को अंगूठे में फंसाकर पानी के भीतर कीचड़ में गाड़ना पड़ता है, ताकि वह ऊपर न तैर सके। रोपाई के दौरान कई बार पैरों में कांटे और कांच भी चुभ जाते हैं, लेकिन इसके बावजूद किसान पूरे उत्साह से कार्य में जुटे हैं। फिलहाल तालाब पूरी तरह नहीं भरा है और केवल कुछ गहरे गड्ढों में पानी मौजूद है, जहां रोपाई की जा रही है। वहीं किसानों की चिंता यह भी है कि यदि अचानक तेज बारिश से तालाब लबालब भरकर पाल से पानी बहने लगा तो सिंघाड़े की फसल बहने का खतरा भी बना रहेगा।

मार्ग किनारे नजर आ रहे सिंघाड़े के रोप

इन दिनों बनेड़िया-देपालपुर मार्ग पर जगह-जगह सिंघाड़े के रोप रखे दिखाई दे रहे हैं। किसान इन्हें तालाब की पाल तक वाहन से लाते हैं, लेकिन वहां से आगे रास्ता नहीं होने के कारण रोप को हाथों में उठाकर कीचड़ से होते हुए तालाब के भीतर ले जाकर रोपाई करते हैं। किसानों का कहना है कि यह मेहनत भरा कार्य है, लेकिन परिवार की आजीविका इसी खेती पर निर्भर होने से वे पूरे समर्पण के साथ इसे कर रहे हैं।

ठोस अपशिष्ट प्रबंधन-2026 एवं पशु जन्म नियंत्रण कार्यक्रम पर नगर पालिका परिषद पीथमपुर की भव्य प्रशिक्षण कार्यशाला

'सफाई अपनाओ, बीमारी भगाओ' अभियान के तहत स्वच्छ, स्वस्थ एवं सुरक्षित पीथमपुर के निर्माण का लिया गया सामूहिक संकल्प

विश्वनाथ समाचार न्यूज नेटवर्क

पीथमपुर,जीवन डोडिया। भारत सरकार के आवासन एवं शहरी कार्य मंत्रालय द्वारा संचालित 'सफाई अपनाओ, बीमारी भगाओ' अभियान के अंतर्गत नगर पालिका परिषद पीथमपुर द्वारा परिषद सभागार में 'ठोस अपशिष्ट प्रबंधन-2026' एवं 'पशु जन्म नियंत्रण (एबीसी) कार्यक्रम' विषय पर भव्य क्षमतावर्धन सह प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती सेवन्ती सुरेश पटेल की अध्यक्षता एवं मुख्य नगर पालिका अधिकारी श्रीमती आरती गरवाल के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ। कार्यशाला का उद्देश्य नगर पालिका के मैदानी एवं कार्यालयीन अधिकारियों-कर्मचारियों को नवीन नियमों, शासन के दिशा-निर्देशों एवं कार्यप्रणाली से अवगत कराना, विभिन्न विभागों के मध्य बेहतर समन्वय स्थापित करना तथा स्वच्छता एवं जनस्वास्थ्य से जुड़े कार्यों को अधिक प्रभावी एवं परिणामोन्मुख बनाना था। कार्यक्रम में कार्यालय अधीक्षक श्री विजय कुमार अहीर, नोडल अधिकारी श्री हिमांशु सिंह, स्वास्थ्य अधिकारी श्री रूपेश कुमार सूर्या, समस्त उपयंत्री, जोन प्रभारी, वार्ड दरोगा, सूचना, शिक्षा एवं संचार (आईईसी) दल (डिवाइन), पशुदल प्रभारी, श्वान पकड़ने वाला दल, वाहन प्रभारी, सीटाडेल संस्था एवं सुलभ संस्था के प्रतिनिधियों सहित नगर पालिका परिषद के विभिन्न विभागों के अधिकारी एवं कर्मचारी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

ठोस अपशिष्ट प्रबंधन के नवीन प्रावधानों की दी विस्तृत जानकारी

कार्यशाला में स्वच्छ भारत मिशन विशेषज्ञ श्री आशीष कुमार द्विवेदी ने 'ठोस अपशिष्ट प्रबंधन-2026' के प्रमुख प्रावधानों पर विस्तारपूर्वक प्रशिक्षण दिया। उन्होंने बताया कि किसी भी शहर की स्वच्छता का आधार स्रोत स्तर पर कचरे का पृथक्करण है। प्रत्येक नागरिक को गीले, सूखे, घरेलू खतरनाक, सैनिटरी तथा अन्य प्रकार के अपशिष्टों को अलग-अलग रखना चाहिए, ताकि उनका वैज्ञानिक



प्रसंस्करण एवं पुनर्चक्रण किया जा सके। उन्होंने घर-घर कचरा संग्रहण, सामग्री पुनर्प्राप्ति केंद्र, कम्पोस्ट निर्माण, पुनर्चक्रण, अधिक मात्रा में कचरा उत्पन्न करने वाले संस्थानों की जिम्मेदारियाँ, उपयोगकर्ता शुल्क, खुले में कचरा फेंकने एवं जलाने पर रोक, प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन तथा स्वच्छ सर्वेक्षण में नागरिक सहभागिता के महत्व पर विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने कहा कि यदि प्रत्येक नागरिक अपने स्तर पर कचरे का सही पृथक्करण करे तो नगर की स्वच्छता व्यवस्था अधिक प्रभावी एवं पर्यावरण अनुकूल बन सकती है।

पशु जन्म नियंत्रण कार्यक्रम पर विशेष प्रशिक्षण

प्रशिक्षण के दौरान पशु जन्म नियंत्रण (एबीसी) कार्यक्रम के अंतर्गत सर्वोच्च न्यायालय एवं भारत सरकार के दिशा-निर्देशों के अनुरूप आवारा श्वानों के मानवीय एवं वैज्ञानिक प्रबंधन की विस्तृत जानकारी दी गई। प्रतिभागियों को बताया गया कि प्रशिक्षित दल द्वारा सुरक्षित तरीके से श्वानों को पकड़कर उनका स्वास्थ्य परीक्षण, नसबंदी एवं रेबीज निरोधी टीकाकरण कराया जाता है तथा उपचार के बाद उन्हें उसी स्थान पर छोड़ा जाता है, जहाँ से उन्हें पकड़ा गया था। विशेषज्ञों ने बताया कि इस प्रक्रिया का उद्देश्य आवारा श्वानों की अनियंत्रित संख्या में वृद्धि रोकना, रेबीज जैसी घातक बीमारी पर नियंत्रण स्थापित करना, मानव-श्वान संघर्ष कम करना तथा पशु कल्याण के सिद्धांतों का पालन करते हुए सुरक्षित एवं संतुलित शहरी वातावरण का निर्माण करना है।

'सफाई अपनाओ, बीमारी भगाओ' अभियान पर विशेष बल

कार्यशाला में अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बताया गया कि स्वच्छता केवल सौंदर्य का विषय नहीं, बल्कि जनस्वास्थ्य से सीधे जुड़ा हुआ विषय है। स्वच्छ वातावरण मलेरिया, डेंगू, चिकनगुनिया, हैजा, टाइफाइड सहित अनेक संक्रामक बीमारियों की रोकथाम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अभियान के अंतर्गत घर एवं कार्यस्थल पर स्वच्छता बनाए रखने, स्रोत स्तर पर कचरे का पृथक्करण सुनिश्चित करने, एकल उपयोग वाले प्लास्टिक का उपयोग कम करने, सार्वजनिक स्थानों पर कचरा न फैलाने, व्यक्तिगत स्वच्छता अपनाने, जलभराव रोकने, स्वच्छ शौचालयों के उपयोग तथा नागरिकों को निरंतर जागरूक करने पर विशेष बल दिया गया।

जनप्रतिनिधियों एवं अधिकारियों ने दिए प्रभावी संदेश

नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती सेवन्ती सुरेश पटेल ने कहा कि स्वच्छता केवल नगर पालिका की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि पूरे समाज का साझा दायित्व है। उन्होंने सभी अधिकारियों, कर्मचारियों एवं नागरिकों से स्वच्छता, कचरा पृथक्करण, प्लास्टिक उन्मूलन तथा पशु जन्म नियंत्रण कार्यक्रम को जन-जन तक पहुँचाने का आह्वान किया। मुख्य नगर पालिका अधिकारी श्रीमती आरती गरवाल ने विभिन्न विभागों के कार्यों की समीक्षा करते हुए स्पष्ट किया कि स्वच्छता एवं जनस्वास्थ्य से जुड़े कार्यों में किसी भी प्रकार की लापरवाही स्वीकार नहीं की जाएगी।

विजयवर्गीय समाज गौतमपुरा ने किया सघन पौधारोपण, पर्यावरण संरक्षण का दिया प्रेरक संदेश



विश्वनाथ समाचार न्यूज नेटवर्क

गौतमपुरा। अखिल भारतीय विजयवर्गीय वैश्य महासभा के आह्वान पर प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी 12 जुलाई, रविवार को पूरे देश में सामूहिक एवं सघन पौधारोपण अभियान आयोजित किया गया। इसी क्रम में विजयवर्गीय समाज गौतमपुरा के तत्वावधान में दशहरा मैदान, गौतमपुरा (जिला इंदौर) में उत्साहपूर्ण वातावरण के बीच व्यापक पौधारोपण कार्यक्रम संपन्न हुआ। कार्यक्रम में समाज के युवाओं एवं बच्चों ने बढ़-चढ़कर सहभागिता निभाते हुए पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लिया। इस अवसर पर नीम, आम, जामुन, तुलसी, अशोक, पेल्टाफार्म, गुलमोहर, पारिजात सहित विभिन्न प्रजातियों के पौधों का रोपण किया गया। उपस्थित जनों ने पौधों के संरक्षण एवं नियमित देखभाल का भी संकल्प लिया, ताकि आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ, हरित एवं स्वस्थ वातावरण मिल सके। समाजजनों ने कहा कि वृक्ष केवल पर्यावरण संतुलन के लिए ही नहीं, बल्कि मानव जीवन के अस्तित्व के लिए भी अत्यंत आवश्यक हैं। ऐसे जन-जागरूकता अभियान समाज में पर्यावरण संरक्षण के प्रति सकारात्मक संदेश देने के साथ-साथ युवाओं और बच्चों में प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता विकसित करते हैं। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से अमित विजयवर्गीय, सतीश विजयवर्गीय, चिंटू विजयवर्गीय, सौरभ विजयवर्गीय, लोकेश विजयवर्गीय, हितेश विजयवर्गीय, गौरव विजयवर्गीय, रोहित विजयवर्गीय सहित विजयवर्गीय समाज गौतमपुरा के अनेक युवा एवं बच्चे उपस्थित रहे। विश्वनाथ समाचार परिवार ने इस सराहनीय पहल की प्रशंसा करते हुए इसे पर्यावरण संरक्षण की दिशा में समाज का अनुकरणीय एवं प्रेरणादायी प्रयास बताया।

बनेडिया आरोग्य केंद्र के नवीन भवन का बीएमओ ने किया निरीक्षण, शेष कार्य शीघ्र पूरा करने के निर्देश



फोटो : बनेडिया आरोग्य केंद्र पर ग्रामीणों के साथ निरीक्षण करतीं खंड चिकित्सा अधिकारी डॉ. विभा नागर।

विश्वनाथ समाचार न्यूज नेटवर्क

देपालपुर, प्रकाश वर्मा। खंड चिकित्सा अधिकारी डॉ. विभा नागर ने शुक्रवार को उप स्वास्थ्य केंद्र बनेडिया के नवीन आरोग्य केंद्र भवन का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने निर्माण कार्य की गुणवत्ता एवं प्रगति का जायजा लिया तथा भवन में मौजूद कमियों का अवलोकन कर ठेकेदार को शेष कार्य शीघ्र एवं गुणवत्तापूर्ण ढंग से पूर्ण करने के निर्देश दिए। डॉ. नागर ने आरोग्य केंद्र की संपूर्ण रूपरेखा का निरीक्षण करते हुए स्वास्थ्य केंद्र प्रभारी से आवश्यक व्यवस्थाओं एवं संभावित कमियों की जानकारी ली। निरीक्षण के दौरान बोरिंग के लिए बिजली के तार नीचे लटके होने का मामला भी सामने आया। इस पर उन्होंने बताया कि विद्युत मंडल को शीघ्र ही लिखित आवेदन भेजकर समस्या का निराकरण कराया जाएगा। निरीक्षण के बाद डॉ. नागर ने ग्रामीणों से भी मुलाकात की और उनकी स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं एवं सुझाव सुने। उन्होंने ग्रामीणों को बेहतर एवं सुगम स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने का आश्वासन दिया।

सम्पादकीय

हर विषय अपना खुद का 'लिविंग म्यूजियम' बना सकता है

स्कूली बच्चों के लिए 12वीं कक्षा तक अधिकांश उच्च शिक्षण लगभग अनदेखे ही रहते हैं। आमतौर पर वे एडमिशन के समय ही वहां पहली बार जाते हैं। कल्पना कीजिए कि ये बच्चे 5वीं कक्षा से या उससे भी पहले कॉलेज कैंपस जाने लगें। आप पूछ सकते हैं कि उन्हें क्यों जाना चाहिए? मेरा जवाब होगा, म्यूजियम देखने के लिए। सोच रहे हैं कि कॉलेज या यूनिवर्सिटी का म्यूजियम से क्या लेना-देना? तो इसका जवाब यहां है। अगर आप कुछ शहरी बच्चों से पूछें कि सब्जियां कहां से आती हैं? तो वे मासूमियत से रेफ्रिजरेटर की ओर इशारा कर सकते हैं, या कह सकते हैं कि सुपरमार्केट से अथवा विभिन्न एप्स के डिलीवरी बॉय के जरिए। लेकिन अगर आपने बेंगलुरु के गांधी कृषि विज्ञान केंद्र में कॉलेज ऑफ हॉर्टिकल्चर द्वारा बनाए गए क्रॉप म्यूजियम को देखा है तो जवाब कुछ और होगा। यह विजिट ऐसा कुछ कर सकती है, जिसे हासिल करने के लिए पाठ्यपुस्तकें अब भी संघर्ष कर रही हैं। आप भी मानेंगे कि तेजी से बढ़ते शहरीकरण के चलते हमारे बच्चों में भोजन के उत्पादन और खपत को लेकर समझ कम होती जा रही है। सब्जियों को सिर्फ डाइनिंग टेबल पर देखने के बजाय इस म्यूजियम में बच्चे उनके बीच चल सकते हैं। वे टमाटर का पौधा छू सकते हैं, पत्तेदार सब्जियां तोड़ सकते हैं और समझ सकते हैं कि भोजन वहां पैदा नहीं होता, जहां वो सोचते हैं। धीरे-धीरे उन्हें यह तथ्य पता चलता है कि इसकी शुरुआत मिट्टी, बीज, धूप, पानी और किसानों की अथक मेहनत से होती है। बच्चे यहां पूरी भोजन यात्रा को समझ सकते हैं- बीज चयन और बुवाई से लेकर सिंचाई, परागण, कटाई, स्टोरेज, परिवहन और आखिर में रसोई तक। इस दौरान वे केंचुओं, मधुमक्खियों, कंपोस्ट पिट्स, औषधीय पौधों और देशी फसल किस्मों से भी परिचित होते हैं। ऐसा अनुभव बिना किसी परीक्षा के बायोलॉजी, इकोलॉजी, न्यूट्रिशन और इकनॉमिक्स सिखाता है। अब सवाल यह है कि यूनिवर्सिटी और कॉलेज सिर्फ क्रॉप म्यूजियम तक ही क्यों रुकें? कोई इंजीनियरिंग कॉलेज इनोवेशन प्लेग्राउंड बना सकता है, जहां बच्चे साइकिल चलाकर बिजली पैदा करें, छोटे पुल बनाएं, वॉटर पंप चलाएं, उपकरणों के साथ प्रयोग करें और व्यवहारिक एक्जिबिट्स के जरिए रोबोटिक्स को समझें। तब फिजिक्स डरावना नहीं, बल्कि मजेदार विषय बन जाएगा। कोई मेडिकल कॉलेज हार्ट, लंग्स और ब्रेन के विशाल वॉक-थ्रू मॉडलों वाला ह्यूमन बॉडी डिस्कवरी सेंटर बना सकता है। इंटरैक्टिव डिस्प्ले के जरिए हैंड हाइजीन, न्यूट्रिशन, वैक्सिनेशन, फर्स्ट-एड और ऑर्गन डोनेशन जैसी बातें सिखाई जा सकती हैं। तब बच्चे अस्पतालों से डरने के बजाय यह समझेंगे कि उनका शरीर कैसे काम करता है। लॉ यूनिवर्सिटीज एक कॉन्स्टिट्यूशन म्यूजियम बना सकती हैं, जहां युवा मॉक कोर्ट, चिल्ड्रंस पार्लियामेंट और अधिकारों व दायित्वों की बहसों में हिस्सा लें। लोकतंत्र, अभ्यास के जरिए ही सबसे बेहतर समझ में आता है। बिजनेस स्कूल एक आंत्रप्रेन्योरशिप म्यूजियम बना सकते हैं, जो असाधारण उद्यम खड़े करने वाले आम भारतीयों की कहानियां बताए। मसलन, कैसे एक सड़क किनारे का छोटा फूड स्टॉल बड़ी रेस्तरां चेन में बदल गया या ग्रामीण महिलाओं ने कैसे सफल सहकारी संस्थाएं बनाईं। यहां बच्चे मिनिएचर बिजनेस चलाना, बजटिंग करना और यह भी सीख सकते हैं कि आइडिया कैसे कंपनी में बदलते हैं। यह आइडिया नया नहीं है। कई उदाहरण पहले से मौजूद हैं। मसलन, अमेरिका में सैन फ्रांसिस्को के एक्सप्लोरेटोरियम में लाइट, साउंड, मोशन, ह्यूमन बिहेवियर और इंजीनियरिंग से जुड़े सैकड़ों इंटरैक्टिव एक्जिबिट्स के जरिए बच्चे रटने के बजाय सवाल पूछकर सीखते हैं। यूके के हैलिफैक्स स्थित नेशनल चिल्ड्रन्स म्यूजियम में विजिटर्स चौकोर पहियों वाली साइकिल चलाते हैं, जियोमेट्रिक स्ट्रक्चर बनाते हैं, विशाल पजल्स सुलझाते हैं और प्रकृति व आर्किटेक्चर में छिपे पैटर्न खोजते हैं।

टीमों की जीत-हार से ज्यादा खेल की जीत होना जरूरी है

फीफा विश्व कप में पक्षपात के आरोपों को लेकर दुनिया दो भागों में विभाजित हो चुकी है और कई तरह के सवाल पूछे जा रहे हैं। जैसे कि क्या वास्तव में अर्जेंटीना के पक्ष में फीफा का किसी तरह का झुकाव है और क्या लियोनेल मेसी को विशेष छूट देने की कोशिश की जा रही है? क्या मेसी की लोकप्रियता रेफरी और अन्य अधिकारियों को उनके तथा अर्जेंटीना के प्रति कुछ अधिक उदार बना रही है? क्या इससे प्रतियोगिता में समान अवसर का सिद्धांत प्रभावित हो रहा है? क्या कम चर्चित खिलाड़ियों वाली टीमें इसका खामियाजा भुगत रही हैं? क्या इससे टूर्नामेंट की साख पर असर पड़ रहा है और फुटबॉल समुदाय में कटुता बढ़ रही है? और क्या फीफा ने इन आशंकाओं को दूर करने के लिए पर्याप्त कदम उठाए हैं? आदि-आदि। फीफा विश्व कप जैसे आयोजन में निष्पक्ष खेल पहली आवश्यकता होती है। हालांकि रेफरिंग को लेकर आरोप कोई नई बात नहीं हैं, लेकिन इस प्रतियोगिता में हुई त्रुटियों की संख्या भी कम नहीं रही है। वीडियो असिस्टेंट रेफरी (वीएआर) प्रणाली गंभीर बहस का विषय बनी हुई है और यदि निर्णयों में एकरूपता की बात करें, तो कई बड़ी चूकें गिनाई जा सकती हैं। भारत के पूर्व फुटबॉलर बाइचुंग भूटिया ने स्पष्ट कहा है कि मिस्र के विरुद्ध खेलते हुए ईरान का जो गोल रद्द किया गया, वह अनुचित था। ईरान के साथ किए गए व्यवहार ने भी इस विवाद को और बढ़ाया। मैच खत्म होने के तुरंत बाद उसके खिलाड़ियों को मैक्सिको भेज दिया गया। शायद पश्चिम एशिया में जारी युद्ध की पृष्ठभूमि में यह एक भू-राजनीतिक आवश्यकता थी। ईरान का मामला अपवाद नहीं था। अर्जेंटीना के साथ खेले गए मैचों में मिस्र और स्विट्जरलैंड के खिलाफ दिए गए निर्णय भी विवादास्पद रहे। जबकि खेलों को संदेह से परे होना चाहिए। यह एक बड़े टूर्नामेंट की बुनियादी शर्त है और इसी मोर्चे पर यह विश्व कप विवादों में घिर गया है। ट्रम्प और फीफा प्रेसिडेंट के बीच फोन पर हुई बातचीत भी पूरी तरह से गैर-जरूरी और ध्यान भटकाने वाली घटना थी। हालांकि फीफा ने स्पष्ट किया कि निर्णय लेने की प्रक्रिया में प्रेसिडेंट की कोई भूमिका नहीं होती, लेकिन इस स्पष्टीकरण से भी आम धारणाओं को लेकर कोई अच्छा संदेश नहीं गया। आखिर खेल से जुड़े किसी मुद्दे पर किसी देश के नेता और फीफा प्रेसिडेंट के बीच बातचीत की आवश्यकता क्यों पड़नी चाहिए? क्या इससे विपक्षी टीमों की आशंकाएं नहीं बढ़तीं? खेल में किसी भी प्रकार का राजनीतिक हस्तक्षेप स्वीकार्य नहीं है और यह घटना संदेह के बीज बोने के लिए पर्याप्त थी। टूर्नामेंट अब निर्णायक दौर में पहुंच चुका है और इसमें बहुत कुछ दांव पर लगा हुआ है। फीफा को इन अंतिम कुछ मुकाबलों के लिए सर्वश्रेष्ठ रेफरियों की नियुक्ति करनी चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हर निर्णय संदेह से परे हो। वह अपनी प्रतिष्ठा पर किसी तरह का दाग नहीं लगने दे सकता। हालांकि इन आरोपों को कॉन्स्पिरेसी थ्योरी कहकर खारिज किया जा सकता है, लेकिन हर बार ऐसा करना काफी नहीं होगा। इस मुद्दे पर उठ रही आवाजें लगातार तेज हो रही हैं और अब अधिक सतर्कता की आवश्यकता है। मेरे लिए व्यक्तिगत रूप से निर्णयों में असंगति सबसे बड़ा मुद्दा रही है। उदाहरण के लिए पेनल्टी के दो मामलों को ही देखिए। एक पेनल्टी इंग्लैंड और हैरी केन के खिलाफ मैक्सिको के साथ मुकाबले में दी गई, जबकि दूसरी मिस्र के खिलाफ खेले गए मैच अर्जेंटीना के पक्ष में। यदि इन दोनों मामलों की तुलना करें, तो निर्णयों में स्पष्ट असंगति दिखाई देती है। दोनों ही ऐसे फैसले थे, जो किसी भी दिशा में जा सकते थे। मैक्सिको के मामले में तो निर्णय एज्टेका स्टेडियम में मेजबान टीम के ही पक्ष में गया था। यह समझा जा सकता है कि खेल में बड़े नामों की अनदेखी नहीं की जा सकती और खेल इन बड़े सितारों के बिना चल भी नहीं सकता। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न धारणा का है। प्रशंसकों की नजर में आपकी छवि पूरी तरह निष्पक्ष होनी चाहिए। किसी भी प्रकार के संदेह की गुंजाइश नहीं होनी चाहिए और यही वह बात है, जिसे फीफा को 19 तारीख को होने वाले फाइनल से पहले सुनिश्चित करना होगा। क्या फीफा ऐसा कर पाएगा, इस सवाल का जवाब ही इस विश्व कप की विरासत तय कर सकता है। इस मुद्दे का महत्व निर्विवाद है। अंततः कौन जीतता है और कौन हारता है, उससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह है कि खेल की जीत हो और यह तभी संभव है, जब हर स्तर पर प्रतियोगिता संदेह से परे बनी रहे। फीफा को अंतिम कुछ मुकाबलों के लिए सर्वश्रेष्ठ रेफरियों की नियुक्ति करनी चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हर निर्णय संदेह से परे हो।

आषाढ़ गुप्त नवरात्रि 15 जुलाई से: इस बार बन रहे हैं विशेष तिथि योग, साधना का मिलेगा शुभ फल

आषाढ़ मास की गुप्त नवरात्रि इस वर्ष 15 जुलाई (बुधवार) से प्रारंभ होकर 23 जुलाई (गुरुवार) तक मनाई जाएगी। ज्योतिषाचार्यों के अनुसार वर्ष 2026 की यह गुप्त नवरात्रि कई दुर्लभ तिथि संयोगों और शुभ योगों से युक्त है, जिससे साधना, जप-तप और देवी आराधना का विशेष महत्व बढ़ गया है। मान्यता है कि इन नौ दिनों में श्रद्धा और नियमपूर्वक की गई उपासना से साधकों को मनोवांछित फल, आध्यात्मिक उन्नति तथा जीवन की बाधाओं से मुक्ति प्राप्त होती है।

उदयातिथि के अनुसार 15 जुलाई को होगी घटस्थापना

हिन्दू पंचांग के अनुसार प्रतिपदा तिथि का आरंभ 14 जुलाई को दोपहर 3:12 बजे से हो जाएगा, लेकिन शास्त्रों में वर्णित उदयातिथि के नियम के कारण व्रत, कलश स्थापना (घटस्थापना) तथा नवरात्रि का शुभारंभ 15 जुलाई को ही किया जाएगा। घटस्थापना का शुभ मुहूर्त : 15 जुलाई, प्रातः 5:33 बजे से 10:09 बजे तक।

तिथियों का विशेष संयोग

इस वर्ष तिथियों के क्रम में विशेष परिवर्तन देखने को मिलेगा। 17 जुलाई (शुक्रवार) को तृतीया और चतुर्थी दोनों तिथियां एक ही दिन रहेंगी। इस दिन मां चंद्रघंटा और मां कूष्मांडा की आराधना के साथ मां भुवनेश्वरी की विशेष साधना का भी महत्व रहेगा।

गुप्त नवरात्रि का पूजन क्रम

15 जुलाई (बुधवार): प्रतिपदा – घटस्थापना, मां शैलपुत्री पूजन एवं मां तारा साधना। 16 जुलाई (गुरुवार): द्वितीया – मां ब्रह्मचारिणी पूजन एवं मां त्रिपुर सुंदरी साधना। 17 जुलाई (शुक्रवार): तृतीया-चतुर्थी संयोग – मां चंद्रघंटा पूजन एवं मां भुवनेश्वरी साधना। 18 जुलाई (शनिवार): चतुर्थी – मां कूष्मांडा पूजन एवं मां भैरवी साधना। - 19 जुलाई (रविवार): पंचमी – मां स्कंदमाता पूजन एवं मां छिन्नमस्ता साधना। - 20 जुलाई (सोमवार): षष्ठी – मां कात्यायनी पूजन एवं मां धूमावती साधना। - 21 जुलाई (मंगलवार): सप्तमी – मां कालरात्रि पूजन एवं मां बगलामुखी साधना। - 22 जुलाई (बुधवार): अष्टमी – मां महागौरी पूजन (दुर्गा अष्टमी) एवं मां मातंगी साधना। - 23 जुलाई (गुरुवार): नवमी – मां सिद्धिदात्री पूजन (महानवमी), मां कमलात्मिका साधना तथा व्रत पारण।

गृहस्थों के लिए सरल पूजा-विधि

धार्मिक विद्वानों के अनुसार गुप्त नवरात्रि की साधना भले ही गोपनीय मानी जाती हो, लेकिन गृहस्थ परिवार भी इसे अत्यंत सरल और सात्विक विधि से अपने घर में संपन्न कर सकते हैं। प्रतिदिन प्रातः एवं सायंकाल माता के समक्ष घी या तिल के तेल का दीपक प्रज्वलित करें। संभव हो तो नौ दिनों तक अखंड ज्योति जलाएं। इसके बाद माता की प्रतिमा या चित्र तथा कलश पर जल या गंगाजल का छिड़काव कर रोली, कुमकुम और अक्षत से तिलक करें। लाल पुष्प, पुष्पमाला एवं श्रृंगार सामग्री अर्पित करें। भोग में प्रतिदिन दो लौंग और बताशे अर्पित करना अत्यंत शुभ माना गया है। फल या मिठाई का भोग भी लगाया जा सकता है। अंत में कपूर और दीपक से मां दुर्गा की आरती करें।

इन नियमों का रखें विशेष ध्यान

पूजन के दौरान काले वस्त्र धारण करने से बचें। कलश स्थापना के लिए मिट्टी, तांबे या पीतल के पात्र का उपयोग करें। लोहे अथवा स्टील के पात्र का प्रयोग वर्जित माना गया है। पूरे नवरात्रि में सात्विक भोजन, संयम और पवित्रता का पालन करना विशेष फलदायी माना गया है।

मानसिक साधना का विशेष महत्व

गुप्त नवरात्रि में बाह्य अनुष्ठानों के साथ-साथ मानसिक जप और ध्यान को अत्यधिक महत्व दिया गया है। श्रद्धालु प्रतिदिन श्रद्धा एवं एकाग्रता के साथ '? ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे' नवर्ण मंत्र का कम से कम एक माला (108 बार) जप करें। धार्मिक मान्यता है कि इससे मन की शांति, रुके हुए कार्यों में सफलता तथा मनोकामनाओं की पूर्ति का मार्ग प्रशस्त होता है। आषाढ़ गुप्त नवरात्रि शक्ति उपासना, आत्मशुद्धि और आध्यात्मिक साधना का पावन अवसर है। श्रद्धा, संयम और विधि-विधान के साथ की गई देवी आराधना जीवन में सकारात्मक ऊर्जा, सुख-समृद्धि और मंगलकारी परिणाम प्रदान करती है।

दीपक जायसवाल
ज्योतिष लेखक
मो.: 82238 20002

उज्जैन एलपीजी बॉटलिंग प्लांट पर सुरक्षा मानकों को लेकर गंभीर शिकायत, निष्पक्ष जांच की मांग तेज

विश्वनाथ समाचार न्यूज नेटवर्क

उज्जैन। उज्जैन जिले की घट्टिया तहसील स्थित इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड (आईओसीएल) के एलपीजी बॉटलिंग प्लांट से जुड़ी एक शिकायत ने एलपीजी उपभोक्ताओं की सुरक्षा और गुणवत्ता नियंत्रण व्यवस्था पर गंभीर प्रश्न खड़े कर दिए हैं। प्लांट के कर्मचारी होने का दावा करने वाले सत्यप्रकाश साहू ने विभिन्न सक्षम प्राधिकारियों को भेजी गई शिकायतों में आरोप लगाया है कि कथित रूप से कुछ ऐसे एलपीजी सिलेंडरों को, जिन्हें तकनीकी मानकों के अनुसार स्क्रैप अथवा उपयोग से बाहर किया जाना चाहिए था, आवश्यक सुरक्षा परीक्षणों और निर्धारित प्रक्रिया का पूर्ण पालन किए बिना दोबारा वितरण के लिए भेजा गया। शिकायतकर्ता का दावा है कि यह मामला केवल विभागीय अनियमितता तक सीमित नहीं है, बल्कि यदि आरोप सही पाए जाते हैं तो इससे लाखों एलपीजी उपभोक्ताओं की सुरक्षा प्रभावित हो सकती है। हालांकि, इन आरोपों की अभी तक किसी स्वतंत्र अथवा सक्षम जांच एजेंसी द्वारा पुष्टि नहीं हुई है।

शिकायत में क्या लगाए गए हैं आरोप

शिकायतकर्ता के अनुसार जुलाई 2025 के दौरान प्लांट में पंचर, बॉडी लीक अथवा अन्य तकनीकी दोष वाले कुछ सिलेंडरों को निर्धारित स्क्रैप प्रक्रिया का पालन किए बिना कथित रूप से केवल मरम्मत अथवा रंग-रोगन कर पुनः बाजार में भेजा गया। उनका आरोप है कि ऐसे सिलेंडरों का आवश्यक तकनीकी परीक्षण एवं सुरक्षा मानकों के अनुरूप निरीक्षण नहीं किया गया। शिकायत में यह भी कहा गया है कि इस संबंध में प्लांट प्रबंधन एवं उच्च अधिकारियों को समय-समय पर जानकारी दी गई, लेकिन अपेक्षित कार्रवाई नहीं हुई। शिकायतकर्ता का आरोप है कि मामले को उठाने के बाद उन्हें विभागीय प्रताड़ना का सामना करना पड़ा और बाद में निलंबित कर दिया गया। उनका कहना है कि उनका उद्देश्य व्यक्तिगत सेवा विवाद नहीं, बल्कि सार्वजनिक सुरक्षा से जुड़े मामले की निष्पक्ष जांच कराना है।

कई स्तरों पर भेजी गई शिकायत

शिकायतकर्ता के अनुसार उन्होंने मुख्यमंत्री कार्यालय, गृह मंत्रालय, पुलिस महानिदेशक, मुख्यमंत्री हेल्पलाइन तथा अन्य संबंधित विभागों को लिखित शिकायतें भेजीं। उनका दावा है



कि कई माह बीत जाने के बाद भी मामले की प्रभावी जांच अथवा स्पष्ट कार्रवाई की जानकारी उन्हें प्राप्त नहीं हुई।

जिला प्रशासन की भूमिका पर उठे सवाल

चूंकि मामला उज्जैन जिले के घट्टिया स्थित एलपीजी बॉटलिंग प्लांट से जुड़ा है, इसलिए जिला प्रशासन की भूमिका को लेकर भी प्रश्न उठ रहे हैं। यदि संबंधित अधिकारियों को इस प्रकार की शिकायतें प्राप्त हुई थीं, तो उनकी जांच की वर्तमान स्थिति क्या है तथा उपभोक्ताओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए कौन-कौन से कदम उठाए गए, इस संबंध में आधिकारिक जानकारी सार्वजनिक होना आवश्यक माना जा रहा है। अब तक जिला प्रशासन, संबंधित विभाग अथवा इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड की ओर से शिकायत के आरोपों पर कोई विस्तृत आधिकारिक प्रतिक्रिया सार्वजनिक रूप से सामने नहीं आई है।

साक्ष्य होने का दावा

शिकायतकर्ता का दावा है कि उनके पास वीडियो, दस्तावेज तथा अन्य तकनीकी साक्ष्य उपलब्ध हैं, जिन्हें वे किसी सक्षम एवं निष्पक्ष जांच एजेंसी के समक्ष प्रस्तुत करने को तैयार हैं। उन्होंने यह भी दावा किया है कि उनके पास उपयोग में मौजूद एक एलपीजी सिलेंडर का भी परीक्षण कराया जा सकता है।

विशेषज्ञों की राय

एलपीजी सिलेंडर उच्च दबाव वाले पात्र होते हैं, जिनके निर्माण, परीक्षण, मरम्मत, उपयोग तथा स्क्रैपिंग की प्रक्रिया निर्धारित तकनीकी मानकों एवं वैधानिक प्रावधानों के अनुसार की जाती है। यदि किसी सिलेंडर में पंचर, बॉडी लीक या संरचनात्मक क्षति पाई जाती है, तो उसके संबंध में अपनाई जाने वाली प्रक्रिया का पालन उपभोक्ताओं की सुरक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। ऐसे मामलों में किसी भी प्रकार की अनियमितता की पुष्टि केवल अधिकृत तकनीकी जांच और सक्षम एजेंसी की रिपोर्ट के आधार पर ही की जा सकती है।

जांच के बाद ही स्पष्ट होगी सच्चाई

फिलहाल शिकायत में लगाए गए सभी आरोप शिकायतकर्ता के दावे हैं, जिनकी स्वतंत्र पुष्टि होना शेष है। आरोपों की सत्यता अथवा असत्यता का निर्धारण केवल सक्षम प्राधिकारी द्वारा की जाने वाली निष्पक्ष, पारदर्शी एवं तकनीकी जांच के बाद ही संभव होगा। यदि जांच में शिकायत निराधार पाई जाती है तो संबंधित पक्ष को स्पष्ट रूप से राहत मिलनी चाहिए, वहीं यदि आरोप प्रमाणित होते हैं तो सार्वजनिक सुरक्षा से जुड़े इस मामले में नियमानुसार जिम्मेदार व्यक्तियों के विरुद्ध आवश्यक कार्रवाई की जानी चाहिए। चूंकि यह विषय सीधे लाखों एलपीजी उपभोक्ताओं की सुरक्षा से जुड़ा है, इसलिए निष्पक्ष एवं समयबद्ध जांच जनहित की दृष्टि से अत्यंत आवश्यक मानी जा रही है।



मुख्यमंत्री के प्रभार वाले इंदौर जिले की सीमा पर बड़ा सवाल

2028 सिंहस्थ की तैयारी के दावे, लेकिन चंबल किनारे प्रशासनिक लापरवाही के संकेत! उफनती नदी के बीच पुल निर्माण जारी, मेदांत स्टॉप डैम से ओवरफ्लो ने बढ़ाई ग्रामीणों की चिंता



विश्वनाथ समाचार न्यूज नेटवर्क

इंदौर/धार। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव सरकार लगातार 2028 सिंहस्थ की तैयारियों और विकास कार्यों को प्राथमिकता देने का दावा कर रही है। लेकिन मुख्यमंत्री के प्रभार वाले इंदौर जिले की सीमा से लगे घाटाबिल्लौद-मेदांत क्षेत्र में सामने आए हालात इन दावों की जमीनी हकीकत पर गंभीर सवाल खड़े कर रहे हैं। एक तरफ चंबल नदी पर लगभग 35 करोड़ रुपये की लागत से बन रहे फोरलेन पुल का निर्माण उफनती नदी के बीच जारी है। दूसरी ओर मेदांत स्टॉप डैम से पानी लगातार ओवरफ्लो हो रहा है और ग्रामीण आरोप लगा रहे हैं कि समय रहते शटर नहीं खोले गए। यदि बारिश का सिलसिला जारी रहा तो खेतों, मकानों और गांवों में जलभराव की आशंका से इनकार नहीं किया जा सकता। सबसे गंभीर सवाल यह है कि जब जलस्तर लगातार बढ़ रहा था, तब संबंधित विभागों ने समय रहते एहतियाती कदम क्यों नहीं उठाए? क्या विभागों के बीच समन्वय की कमी है,



या फिर चेतावनियों को गंभीरता से नहीं लिया गया? प्रशासन का कहना है कि पुल निर्माण निर्धारित समय पर पूरा होगा और 2028 सिंहस्थ से पहले परियोजना पूरी करने का लक्ष्य है। लेकिन स्थानीय लोग पूछ रहे हैं कि यदि करोड़ों रुपये की परियोजना के लिए विस्तृत कार्ययोजना बन सकती है, तो जल प्रबंधन और ग्रामीणों की सुरक्षा के लिए प्रभावी व्यवस्था क्यों नहीं दिख रही? यह मामला केवल एक पुल या एक स्टॉप डैम तक सीमित नहीं है। यह प्रशासनिक जवाबदेही, आपदा प्रबंधन और सरकारी तैयारियों की वास्तविक स्थिति का भी प्रश्न है। मुख्यमंत्री के प्रभार वाले जिले की सीमा पर यदि ग्रामीण जलभराव की आशंका को लेकर लगातार आवाज उठा रहे हैं, तो संबंधित विभागों और जिला प्रशासन की जिम्मेदारी बनती है कि वे तत्काल स्थिति की समीक्षा करें, आवश्यक तकनीकी निर्णय लें और जनता को भरोसा दिलाएं कि सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता है। अब निगाहें सरकार पर हैं। क्या संबंधित विभाग इस मामले की तत्काल जांच कर स्थिति स्पष्ट करेंगे? क्या ग्रामीणों की आशंकाओं को दूर करने के लिए समयबद्ध कार्रवाई होगी? और क्या विकास कार्यों के साथ-साथ आपदा प्रबंधन को भी समान प्राथमिकता मिलेगी? इन सवालों का जवाब केवल बयान नहीं, बल्कि जमीनी कार्रवाई से मिलेगा।

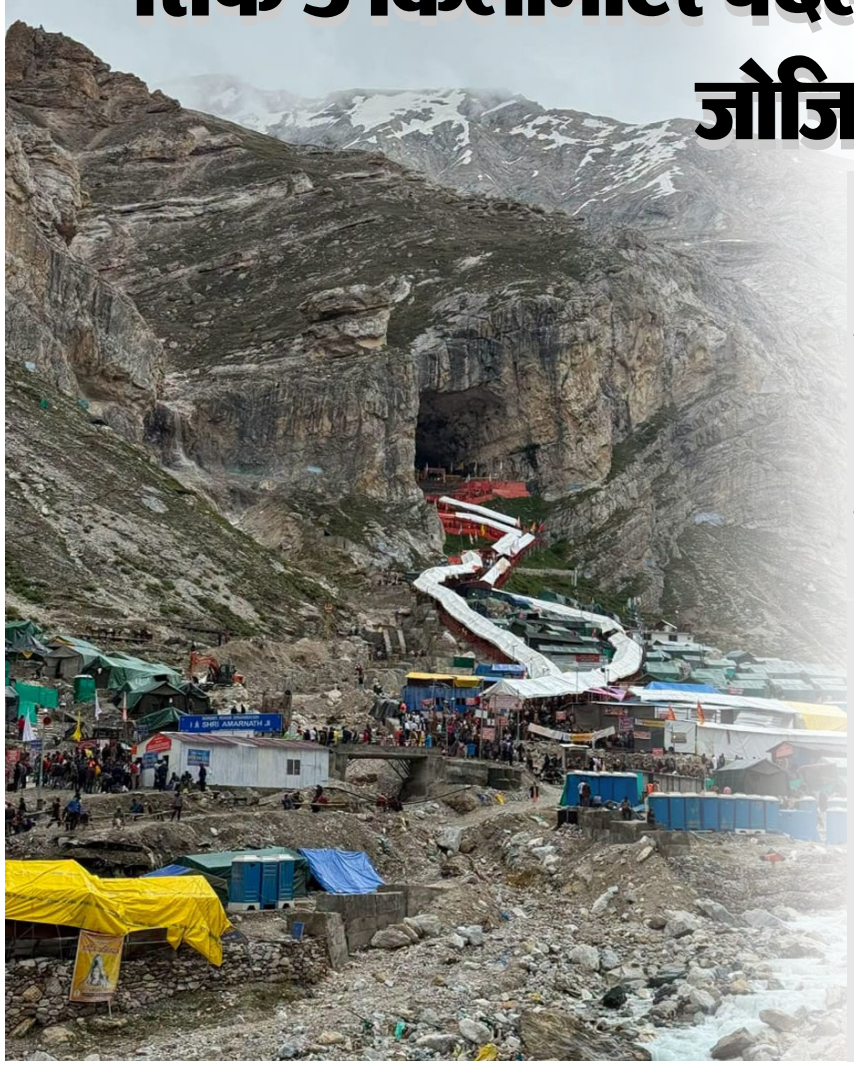
पर्यावरण संरक्षण का संदेशः बनेड़िया में जैन समाज और सिद्धिविनायक योग केंद्र ने किया पौधरोपण



विश्वनाथ समाचार न्यूज नेटवर्क

देपालपुर, प्रकाश वर्मा। पर्यावरण संरक्षण और हरित भविष्य के संकल्प के साथ बनेड़िया स्थित दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र मंदिर परिसर में रविवार को व्यापक पौधरोपण अभियान आयोजित किया गया। कार्यक्रम का आयोजन श्री सिद्धिविनायक योग केंद्र, इंदौर एवं स्थानीय जैन समाज के सहयोग से किया गया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में समाजजनों ने उत्साहपूर्वक पौधे लगाए और उनकी सुरक्षा का संकल्प लिया। आयोजन में मंदिर समिति के संदीप जैन का विशेष सहयोग रहा। संदीप जैन ने कहा कि प्रकृति से केवल संसाधन लेने के बजाय अब धरती को लौटाने का समय है। आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ वातावरण, शुद्ध हवा और सुरक्षित जल उपलब्ध कराना हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है। उन्होंने पौधों के संरक्षण पर विशेष जोर देते हुए बताया कि लगाए गए पौधे कम पानी और पथरीली जमीन में भी अच्छी तरह विकसित होकर क्षेत्र की हरियाली, जैव विविधता और भूजल स्तर सुधारने में सहायक होंगे। कार्यक्रम में सभी प्रतिभागियों ने पौधों की नियमित देखभाल करने तथा पर्यावरण संरक्षण का संदेश जन-जन तक पहुंचाने का संकल्प लिया।

अमरनाथ यात्रा में ऐतिहासिक बदलाव की तैयारी: भविष्य में सिर्फ 5 किलोमीटर पैदल चलकर होंगे बाबा बर्फानी के दर्शन, जोजिला टनल के साथ खुलेगा तीसरा मार्ग



विश्वनाथ समाचार न्यूज नेटवर्क

नई दिल्ली/श्रीनगर। करोड़ों शिवभक्तों के लिए आने वाले वर्षों में अमरनाथ यात्रा पहले से कहीं अधिक सुगम और सुरक्षित हो सकती है। केंद्र सरकार जोजिला टनल परियोजना के पूरा होने के बाद अमरनाथ यात्रा के लिए एक नए एवं तीसरे मार्ग को विकसित करने पर गंभीरता से विचार कर रही है। यदि यह महत्वाकांक्षी योजना धरातल पर उतरती है तो श्रद्धालुओं को वर्तमान की तरह 14 या 34 किलोमीटर की कठिन पदयात्रा नहीं करनी पड़ेगी, बल्कि केवल लगभग 5 किलोमीटर पैदल चलकर ही बाबा बर्फानी के पवित्र हिमलिंग के दर्शन संभव हो सकेंगे। विश्वसनीय सूत्रों के अनुसार, इस प्रस्ताव की व्यवहार्यता (फिजिबिलिटी) का विस्तृत अध्ययन कराया जा रहा है। बताया जा रहा है कि लद्दाख प्रशासन ने भी इस दिशा में सकारात्मक पहल करते हुए विस्तृत रिपोर्ट मांगी है। यदि रिपोर्ट अनुकूल रहती है तो जोजिला टनल के चालू होने के साथ ही इस नए मार्ग के विकास की प्रक्रिया तेज हो सकती है।

जोजिला टनल बनेगी गेम चेंजर

श्रीनगर-लेह राष्ट्रीय राजमार्ग पर निर्माणाधीन जोजिला टनल देश की सबसे महत्वपूर्ण रणनीतिक और आधारभूत संरचना परियोजनाओं में शामिल है। वर्ष 2028 की शुरुआत तक इसके पूरा होने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। टनल शुरू होने के बाद वर्षभर आवागमन आसान होगा और इसी के साथ अमरनाथ यात्रा के नए मार्ग को विकसित करने की योजना भी आगे बढ़ सकती है। नई व्यवस्था के तहत श्रद्धालु वाहनों से सीधे मीनामर्ग तक पहुंचेंगे। इसके बाद लगभग 5 किलोमीटर की पैदल यात्रा कर पवित्र अमरनाथ गुफा तक पहुंच सकेंगे। इस मार्ग पर कुल चढ़ाई लगभग 1,959 फीट बताई जा रही है, जो मौजूदा दोनों मार्गों की तुलना में कहीं अधिक सुविधाजनक मानी जा रही है।

मीनामर्ग बनेगा नया आधार शिविर

सरकार की प्रारंभिक योजना के अनुसार मीनामर्ग घाटी को नए बेस कैंप के रूप में विकसित किया जा सकता है। यहां श्रद्धालुओं के लिए आधुनिक पार्किंग, यात्री आवास, पंजीकरण केंद्र, स्वास्थ्य सुविधाएं, सुरक्षा व्यवस्था, भोजनालय, शौचालय, संचार नेटवर्क तथा अन्य आवश्यक बुनियादी सुविधाएं विकसित की जाएंगी। जोजिला टनल में यातायात शुरू होने से पहले ही इन सुविधाओं के निर्माण का कार्य प्रारंभ किए जाने की संभावना जताई जा रही है, ताकि नया मार्ग पूरी तरह व्यवस्थित रूप से श्रद्धालुओं के लिए खोला जा सके।

वर्षों से उठ रही थी तीसरे मार्ग की मांग

अमरनाथ यात्रा के लिए तीसरा मार्ग खोलने की मांग कोई नई नहीं है। वर्ष 2018 से जम्मू-कश्मीर और लद्दाख क्षेत्र के जनप्रतिनिधि तथा विभिन्न सामाजिक संगठन लगातार इस विषय को सरकार के समक्ष उठाते रहे हैं। उनका मानना रहा है कि तीसरा मार्ग खुलने से यात्रा अधिक सुरक्षित, सुविधाजनक और कम समय में पूरी की जा सकेगी। अब जोजिला टनल के निर्माण के अंतिम चरण में पहुंचने के साथ इस मांग को नई गति मिली है।

वर्तमान में दो मार्गों से होती है यात्रा

फिलहाल अमरनाथ यात्रा दो पारंपरिक मार्गों से संचालित होती है। पहलगाम मार्ग सबसे पुराना और पारंपरिक मार्ग माना जाता है। दक्षिण कश्मीर के पहलगाम से शुरू होने वाली इस यात्रा में श्रद्धालुओं को लगभग 34 किलोमीटर की कठिन पदयात्रा करनी पड़ती है। इस दौरान करीब 8,000 फीट की चढ़ाई पार करनी होती है। दूसरा मार्ग बालटाल से होकर जाता है। यह अपेक्षाकृत छोटा है, लेकिन अधिक खड़ी चढ़ाई वाला माना जाता है। इस मार्ग पर श्रद्धालुओं को लगभग 14 किलोमीटर पैदल चलना पड़ता है और लगभग 3,000 फीट की चढ़ाई करनी होती है। प्रस्तावित तीसरे मार्ग में मीनामर्ग की ऊंचाई लगभग 10,800 फीट, बालटाल आधार शिविर की 8,999 फीट तथा पहलगाम आधार शिविर की 5,702 फीट बताई जाती है। इस कारण मीनामर्ग से गुफा तक केवल पांच किलोमीटर की यात्रा अपेक्षाकृत कम दूरी और संतुलित चढ़ाई के साथ पूरी की जा सकेगी।

नए मार्ग से होंगे अनेक लाभ

विशेषज्ञों का मानना है कि तीसरा मार्ग खुलने से अमरनाथ यात्रा की तस्वीर बदल सकती है। सबसे बड़ा लाभ यह होगा कि श्रद्धालुओं को लंबी और कठिन पदयात्रा से राहत मिलेगी। बुजुर्ग, महिलाएं, दिव्यांग तथा अस्वस्थ श्रद्धालु भी पहले की तुलना में अधिक आसानी से बाबा बर्फानी के दर्शन कर सकेंगे। कम दूरी होने से खराब मौसम के कारण यात्रा बाधित होने की संभावना भी कम होगी। साथ ही आपदा प्रबंधन, बचाव एवं राहत कार्य भी पहले की तुलना में अधिक प्रभावी ढंग से संचालित किए जा सकेंगे।

लद्दाख और सीमावर्ती क्षेत्रों को मिलेगा आर्थिक संबल

नया मार्ग केवल धार्मिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण साबित हो सकता है। द्रास, करगिल, मीनामर्ग और आसपास के क्षेत्रों में पर्यटन गतिविधियों को नया विस्तार मिलेगा। स्थानीय युवाओं के लिए होटल, होम-स्टे, परिवहन, टैक्सी सेवा, घोड़ा-खच्चर संचालन, भोजनालय, टेंट, गाइड सेवा, हस्तशिल्प और अन्य व्यवसायों में रोजगार के नए अवसर पैदा होंगे। इससे सीमावर्ती क्षेत्रों की अर्थव्यवस्था को भी मजबूती मिलेगी।

सुरक्षा व्यवस्था होगी और मजबूत

विशेषज्ञों का मानना है कि नए मार्ग के विकसित होने से सुरक्षा एजेंसियों को भी बेहतर रणनीति बनाने में सहायता मिलेगी। कम दूरी होने के कारण श्रद्धालुओं की निगरानी, चिकित्सा सहायता, आपातकालीन राहत और संचार व्यवस्था को अधिक प्रभावी बनाया जा सकेगा। इससे यात्रा की समग्र सुरक्षा व्यवस्था और मजबूत होगी।

भविष्य की अमरनाथ यात्रा का नया अध्याय

यदि सरकार की यह महत्वाकांक्षी योजना सफल होती है तो अमरनाथ यात्रा के इतिहास में यह सबसे बड़ा परिवर्तन माना जाएगा। केवल पांच किलोमीटर की पैदल यात्रा के माध्यम से बाबा बर्फानी के दर्शन संभव होने से देश-विदेश से आने वाले लाखों श्रद्धालुओं को बड़ी राहत मिलेगी। साथ ही धार्मिक पर्यटन, स्थानीय विकास, रोजगार, आधारभूत संरचना और राष्ट्रीय सुरक्षा-सभी क्षेत्रों में इसका सकारात्मक प्रभाव देखने को मिलेगा। आने वाले वर्षों में जोजिला टनल और प्रस्तावित तीसरा मार्ग न केवल अमरनाथ यात्रा को नई पहचान देंगे, बल्कि जम्मू-कश्मीर और लद्दाख के विकास की दिशा में भी एक ऐतिहासिक मील का पत्थर साबित हो सकते हैं।

इंदौर जिले में 95% बोवनी पूरी, कई किसानों ने तीसरी बार की सोयाबीन की बुवाई

मौसम साफ होने से खेतों में डोरा, खरपतवार नियंत्रण और पौधरोपण अभियान ने पकड़ी रफ्तार

विश्वनाथ समाचार न्यूज नेटवर्क



इंदौर। इंदौर जिले के ग्रामीण अंचलों में मानसून की शुरुआत के बाद हुई अच्छी बारिश से खरीफ फसलों की बोवनी लगभग पूरी हो चुकी है। कृषि विभाग के अनुसार जिले के कई क्षेत्रों में अब तक करीब 254 मिमी (लगभग 10 इंच) वर्षा दर्ज की गई है तथा लगभग 95 प्रतिशत रकबे में बोवनी पूर्ण हो चुकी है। हालांकि कुछ स्थानों पर अत्यधिक वर्षा और बीज अंकुरण प्रभावित होने से किसानों को तीसरी बार तक सोयाबीन की बुवाई करनी पड़ी। देपालपुर क्षेत्र सहित आसपास के गांवों में मौसम खुलने के बाद किसान खेतों में सक्रिय हो गए हैं। ट्रैक्टरों और आधुनिक कृषि यंत्रों से डोरा चलाने तथा खरपतवार नियंत्रण का कार्य तेजी से किया जा रहा है। मालवा का सोयाबीन क्षेत्र अब आधुनिक कृषि तकनीकों की ओर तेजी से बढ़ रहा है।

कई किसानों ने तीसरी बार की सोयाबीन की बुवाई

बनेड़िया के किसान गिरीश पटेल ने बताया कि पहली बार बोया गया बीज ठीक से अंकुरित नहीं हुआ, जबकि दूसरी बुवाई तेज बारिश के कारण प्रभावित हो गई। ऐसी स्थिति में उन्हें तीसरी बार सोयाबीन की बुवाई करनी पड़ी। क्षेत्र के अनेक किसानों ने भी तीसरी बार कम अवधि में पकने वाली सोयाबीन-9560 किस्म का बीज बोया है, ताकि फसल समय पर तैयार हो सके।

कृषि विभाग की सलाह

कृषि विस्तार अधिकारी सोनम तिवारी ने बताया कि पहले चरण में बोई गई सोयाबीन फसल के लिए वर्तमान समय डोरा चलाने और खरपतवार नियंत्रण का सबसे उपयुक्त समय है। उन्होंने बताया कि फसल की शुरुआती अवस्था में खरपतवारनाशक दवाओं का छिड़काव तथा लगभग 25 दिन बाद डोरा चलाना लाभकारी रहता है। वहीं देर से बोई गई फसल को फिलहाल पर्याप्त नमी की आवश्यकता है। किसानों को खेतों में जलभराव नहीं होने देने की भी सलाह दी गई है।

खेतों में बढ़ी कृषि गतिविधियां

पिछले कुछ दिनों से मौसम साफ रहने के कारण कृषि दवा दुकानों, स्प्रे पंप मरम्मत केंद्रों तथा ट्रैक्टर चालकों के यहां किसानों की भीड़ देखी जा रही है। किसानों का कहना है कि लगभग 90 प्रतिशत क्षेत्र में खरपतवार नियंत्रण के लिए दवाओं का उपयोग किया जा रहा है, जिससे लागत और समय दोनों की बचत हो रही है। प्रगतिशील किसान चिंतामन पटेल, धर्मराज पटेल, विष्णुप्रसाद चौधरी, रामचंद्र पटेल, प्रकाश पटेल, बालाराम पटेल तथा महेश पटेल ने बताया कि डोरा चलाने से खरपतवार नष्ट होते हैं, मिट्टी में वायु संचार बढ़ता है, नमी संरक्षित रहती है तथा फसल की जड़ों को पर्याप्त पोषण मिलता है। इससे उत्पादन में भी वृद्धि होती है।

छोटे किसान हाथ से चला रहे डोरा

जिन किसानों के पास कम भूमि है और जो ट्रैक्टर का खर्च वहन नहीं कर सकते, वे हाथ से चलने वाले डोरे से खेतों में गुड़ाई और खरपतवार नियंत्रण का कार्य कर रहे हैं।

लगातार बारिश से निखरी पर्यटक नगरी मांडव की खूबसूरती, हरियाली की चादर ओढ़े ऐतिहासिक धरोहरों की ओर उमड़ रहे देश-विदेश के पर्यटक





विश्वनाथ समाचार न्यूज नेटवर्क

मांडव (धार)। मालवा अंचल की ऐतिहासिक एवं विश्वप्रसिद्ध पर्यटक नगरी मांडव में मानसून की जोरदार बारिश के बाद प्राकृतिक सौंदर्य अपने पूरे शबाब पर है। चारों ओर फैली हरियाली, बादलों की अठखेलियां, पहाड़ियों से बहते झरने और प्राचीन स्मारकों का मनमोहक दृश्य पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित कर रहा है। बारिश के बाद मांडव की वादियां मानो फिर से जीवंत हो उठी हैं और यहां का हर नजारा प्रकृति प्रेमियों के लिए किसी स्वर्ग से कम दिखाई नहीं दे रहा। मानसून की दस्तक के साथ ही मांडव में पर्यटकों की आवाजाही लगातार बढ़ने लगी है। मध्य प्रदेश के विभिन्न जिलों के अलावा गुजरात, महाराष्ट्र, राजस्थान, दिल्ली सहित देश के कई राज्यों से पर्यटक यहां पहुंच रहे हैं। वहीं विदेशी पर्यटक भी मांडव की ऐतिहासिक धरोहरों और प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लेने के लिए बड़ी संख्या में पहुंच रहे हैं। बारिश के बाद जहाज महल, हिंडोला महल, रूपमती महल, बाज बहादुर महल, जामी मस्जिद, होशंगशाह का मकबरा और अन्य ऐतिहासिक स्मारकों की भव्यता और भी अधिक निखर गई है। हरियाली से आच्छादित पहाड़ियां, ठंडी हवाएं और बादलों से घिरा आसमान पर्यटकों को घंटों तक यहां रुकने के लिए मजबूर कर रहा है। कई स्थानों पर लोग फोटोग्राफी और वीडियो बनाते नजर आ रहे हैं, वहीं नवविवाहित जोड़े और युवा वर्ग भी बड़ी संख्या में मांडव का रुख कर रहे हैं। सप्ताहांत और अवकाश के दिनों में मांडव की सड़कों, पार्किंग स्थलों, उद्यानों और पर्यटन स्थलों पर विशेष चहल-पहल देखने को मिल रही है। स्थानीय होटल, रिसॉर्ट, रेस्टोरेंट और छोटे व्यापारियों के व्यवसाय में भी अच्छी बढ़ोतरी हुई है। पर्यटन गतिविधियां तेज होने से स्थानीय लोगों के रोजगार को भी नई गति मिली है। धार जिले की शान मांडव अपनी ऐतिहासिक विरासत, स्थापत्य कला और प्राकृतिक सौंदर्य के लिए देश-दुनिया में अलग पहचान रखता है। मानसून के मौसम में यहां का वातावरण और भी आकर्षक हो जाता है, जिसके कारण हर वर्ष हजारों पर्यटक यहां पहुंचते हैं। प्रशासन द्वारा भी पर्यटकों की सुविधा और सुरक्षा के लिए आवश्यक व्यवस्थाएं की जा रही हैं, ताकि आने वाले पर्यटक सुरक्षित एवं सुखद यात्रा का अनुभव कर सकें। इतिहास, संस्कृति और प्रकृति का अद्भुत संगम मांडव एक बार फिर मानसून में अपनी अनुपम छटा बिखेर रहा है। बारिश से धुली प्राचीन इमारतें, हरियाली से ढकी पहाड़ियां और मनमोहक प्राकृतिक दृश्य यह संदेश दे रहे हैं कि मांडव केवल एक ऐतिहासिक नगरी ही नहीं, बल्कि मध्य प्रदेश के पर्यटन की सबसे अनमोल धरोहरों में से एक है। यही कारण है कि आज मांडव देश-विदेश के पर्यटकों की पहली पसंद बनता जा रहा है और धार जिले की प्रतिष्ठा को नई ऊंचाइयों तक पहुंचा रहा है।

खरीफ फसलों ने ओढ़ी हरियाली की चादर, खेतों में बढ़ी किसानों की रौनक

सोयाबीन सहित अन्य फसलों की बढ़वार जारी, खरपतवार नियंत्रण में जुटे किसान

विश्वनाथ समाचार न्यूज नेटवर्क



इंदौर। जिले में मानसून की अच्छी बारिश के बाद ग्रामीण अंचलों का नजारा पूरी तरह बदल गया है। खेत हरियाली की चादर से ढक गए हैं और खरीफ सीजन की फसलें तेजी से बढ़वार कर रही हैं। सोयाबीन सहित अन्य खरीफ फसलें कई क्षेत्रों में लगभग 15 दिन की हो चुकी हैं। समय पर हुई वर्षा से किसानों में बेहतर उत्पादन की उम्मीद जगी है और वे फसलों की देखरेख में पूरी सक्रियता से जुटे हुए हैं। फसलों की बढ़वार के साथ खेतों में खरपतवार भी तेजी से फैलने लगे हैं। मौसम खुलते ही किसानों ने खरपतवारनाशक दवाओं का छिड़काव तेज कर दिया। सुबह से शाम तक ग्रामीण क्षेत्रों में स्प्रे मशीनों की आवाज सुनाई दे रही है। किसान मानते हैं कि फसल की शुरुआती अवस्था में खरपतवार पर नियंत्रण भविष्य की उपज तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कृषि विस्तार अधिकारी सोनम तिवारी ने बताया कि फसल की प्रारंभिक अवस्था में खरपतवार नियंत्रण अत्यंत आवश्यक है। यदि समय रहते खरपतवार नहीं हटाए जाएं तो वे फसल के पोषक तत्वों, नमी और प्रकाश पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं, जिससे उत्पादन प्रभावित हो सकता है। उन्होंने किसानों को खेतों की नियमित निगरानी करने तथा कृषि विभाग की सलाह के अनुसार आवश्यक कृषि कार्य समय पर करने की सलाह दी। इन दिनों ग्रामीण क्षेत्रों में खेतों का दृश्य भी बदला-बदला दिखाई दे रहा है। कहीं किसान दवाओं का छिड़काव कर रहे हैं तो कहीं फसल की बढ़वार का निरीक्षण कर आगे की कृषि रणनीति बना रहे हैं। अनुकूल मौसम और समय पर कृषि कार्यों से इस बार खरीफ फसलों से बेहतर उत्पादन की उम्मीद जताई जा रही है।

मौसम में बदलाव से बढ़ीं मौसमी बीमारियां

मानसून की सक्रियता के बीच लगातार बदलते मौसम का असर लोगों के स्वास्थ्य पर भी दिखाई देने लगा है। दिनभर कभी तेज धूप तो कभी बादलों की आवाजाही से उमस बढ़ रही है, जिससे लोगों को असहजता का सामना करना पड़ रहा है। अस्पतालों और निजी क्लीनिकों में मौसमी बीमारियों के मरीजों की संख्या लगातार बढ़ रही है। सर्दी, खांसी, बुखार और वायरल संक्रमण जैसी समस्याओं से पीड़ित लोग उपचार के लिए पहुंच रहे हैं। चिकित्सकों ने लोगों को मौसम के अनुरूप सावधानी बरतने, स्वच्छ पेयजल का उपयोग करने और स्वास्थ्य संबंधी लक्षण दिखाई देने पर तुरंत चिकित्सकीय सलाह लेने की अपील की है।

राजस्थान के गुलाबी पत्थरों से संवर रहा भैरव महाराज मंदिर, इस वर्ष पूरा होगा निर्माण



बनेडिया गांव में राजस्थान के गुलाबी पत्थरों से आकार लेता भैरव महाराज मंदिर।

विश्वनाथ समाचार न्यूज नेटवर्क

देपालपुर। बनेडिया गांव के मुख्य चौराहे पर स्थित गिडगिडिया गोत्र के आराध्य भैरव महाराज मंदिर का भव्य जीर्णोद्धार एवं विस्तार कार्य इन दिनों तेजी से प्रगति पर है। राजस्थान के विशेष गुलाबी पत्थरों से निर्मित हो रहे मंदिर का स्वरूप अब स्पष्ट रूप से उभरने लगा है। पुराने एवं जर्जर हो चुके मंदिर की जगह अब भव्य, कलात्मक और पारंपरिक वास्तुशिल्प से सुसज्जित मंदिर आकार ले रहा है। मंदिर निर्माण में पत्थरों पर की जा रही बारीक नक्काशी इसे केवल एक भवन नहीं, बल्कि जीवंत शिल्पकला का उत्कृष्ट उदाहरण बना रही है। हाल ही में स्थापित किए गए आकर्षक पत्थर के स्तंभ (पिलर) मंदिर की भव्यता का आभास कराने लगे हैं। पिछले कई महीनों से चल रहे निर्माण कार्य में प्रत्येक चरण को धार्मिक परंपराओं और आस्था के अनुरूप सावधानीपूर्वक पूरा किया जा रहा है। मंदिर परिसर में चल रहे निर्माण कार्य को देखकर ग्रामीणों और श्रद्धालुओं में उत्साह का माहौल है। क्षेत्रवासी इसे गांव की धार्मिक धरोहर के नए स्वरूप के रूप में देख रहे हैं। निर्माण पूरा होने के बाद मंदिर श्रद्धालुओं के लिए प्रमुख आकर्षण का केंद्र बनेगा। गिडगिडिया गोत्र के बद्रीलाल प्रधान ने बताया कि मंदिर का निर्माण कार्य इस वर्ष पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है। मंदिर के साथ-साथ पूरे परिसर के विकास पर भी कार्य किया जा रहा है, जिससे परिसर अधिक सुव्यवस्थित, सुविधायुक्त और आकर्षक बनेगा। निर्माण योजना पर करोड़ों रुपये की लागत से कार्य किया जा रहा है, जिसमें मंदिर के विस्तार के साथ श्रद्धालुओं के लिए आवश्यक सुविधाओं का भी विकास शामिल है।

भोपाल की उमंगा कुमावत ने बढ़ाया प्रदेश का मान, मिस यूनिवर्स इंडिया मध्य प्रदेश फिनाले का खिताब जीता

विश्वनाथ समाचार न्यूज नेटवर्क

भोपाल, उमेश यादव। राजधानी भोपाल की बेटी उमंगा कुमावत ने अपनी प्रतिभा, आत्मविश्वास, अनुशासन और अथक मेहनत के दम पर मिस यूनिवर्स इंडिया मध्य प्रदेश फिनाले का प्रतिष्ठित खिताब जीतकर प्रदेश का गौरव बढ़ाया है। इस उपलब्धि के साथ अब उमंगा राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित होने वाली मिस यूनिवर्स इंडिया प्रतियोगिता में मध्य प्रदेश का प्रतिनिधित्व करेंगी। इस सफलता के बाद उमंगा कुमावत ने कहा कि मिस यूनिवर्स का मंच केवल सौंदर्य प्रतियोगिता नहीं है, बल्कि यह महिलाओं को आत्मविश्वासी, सशक्त और प्रभावशाली व्यक्तित्व के रूप में समाज के सामने स्थापित करने का एक सशक्त माध्यम है। उनका मानना है कि आज की युवा



महिलाओं को अपने सपनों को साकार करने के लिए आत्मविश्वास, मेहनत और निरंतर सीखने की भावना के साथ आगे बढ़ना चाहिए। उमंगा ने बताया कि मॉडलिंग की दुनिया में अपनी अलग पहचान बनाना आसान नहीं था। इस मुकाम तक पहुंचने के लिए उन्हें लंबे समय तक कठिन परिश्रम, अनुशासित जीवनशैली और अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ा। उन्होंने हर चुनौती को अवसर में बदलते हुए खुद को लगातार बेहतर बनाने का प्रयास किया और इसी दृढ़ संकल्प ने उन्हें सफलता के इस मुकाम तक पहुंचाया। उन्होंने अपनी फिटनेस यात्रा का उल्लेख करते हुए बताया कि उन्होंने नियमित वर्कआउट, संतुलित आहार और कठोर अनुशासन के बल पर अपना वजन 72 किलोग्राम से घटाकर 58 किलोग्राम किया। उमंगा के अनुसार, यह बदलाव केवल शारीरिक नहीं बल्कि मानसिक रूप से भी उन्हें अधिक मजबूत और आत्मविश्वासी बनाने वाला साबित हुआ। उन्होंने कहा कि हर दिन खुद को पहले से बेहतर बनाने का लक्ष्य ही उनकी सबसे बड़ी प्रेरणा और सफलता का आधार रहा। उमंगा ने अपनी इस उपलब्धि का श्रेय अपने परिवार को देते हुए कहा कि कठिन परिस्थितियों में परिवार का अटूट विश्वास, सहयोग और प्रोत्साहन ही उनकी सबसे बड़ी ताकत बना। परिवार के समर्थन ने उन्हें हर चुनौती का सामना करने का साहस दिया और अपने लक्ष्य की ओर निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता को लेकर उमंगा काफी उत्साहित हैं। उन्होंने कहा कि अब उनका लक्ष्य केवल प्रतियोगिता में भाग लेना नहीं, बल्कि अपने प्रदर्शन से मध्य प्रदेश का नाम पूरे देश में रोशन करना है। साथ ही वे अपनी संघर्षपूर्ण यात्रा और सफलता के माध्यम से देशभर की युवतियों को यह संदेश देना चाहती हैं कि यदि लक्ष्य स्पष्ट हो और मेहनत ईमानदारी से की जाए तो कोई भी सपना असंभव नहीं होता। उमंगा कुमावत की इस उपलब्धि पर राजधानी सहित प्रदेशभर में खुशी का माहौल है। सामाजिक संगठनों, शुभचिंतकों और परिचितों ने उन्हें बधाई देते हुए राष्ट्रीय प्रतियोगिता के लिए शुभकामनाएं दी हैं। प्रदेशवासियों को उम्मीद है कि उमंगा राष्ट्रीय मंच पर भी अपनी प्रतिभा का उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए मध्य प्रदेश का गौरव बढ़ाएंगी।

महाकाल की सवारी से पहले सुरक्षा व्यवस्थाओं का व्यापक निरीक्षण, 20 जुलाई तक कमियां दूर करने के निर्देश

विश्वनाथ समाचार न्यूज नेटवर्क

उज्जैन। आगामी श्रावण-भादौ मास में भगवान श्री महाकालेश्वर की पारंपरिक सवारी को सुरक्षित, सुव्यवस्थित एवं निर्विघ्न संपन्न कराने के उद्देश्य से जिला पुलिस एवं जिला प्रशासन ने शनिवार को सवारी मार्ग का संयुक्त निरीक्षण कर सुरक्षा व्यवस्थाओं का विस्तृत आकलन किया। अधिकारियों ने मार्ग पर चिन्हित कमियों को प्राथमिकता के आधार पर दूर करते हुए सभी आवश्यक कार्य 20 जुलाई तक पूर्ण करने के निर्देश दिए। संयुक्त निरीक्षण में अपर कलेक्टर यतेंद्र सिंह, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (नगर पूर्व) आलोक शर्मा, नगर निगम के अपर आयुक्त पवन सिंह, नगर पुलिस अधीक्षक (कोतवाली अनुभाग) दीपक सिंह, महाकाल थाना प्रभारी



निरीक्षक गगन बादल, मध्यप्रदेश पूर्व क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी, लोक निर्माण विभाग तथा अन्य संबंधित विभागों के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे। अधिकारियों ने संपूर्ण सवारी मार्ग का पैदल भ्रमण कर सुरक्षा व्यवस्था, कानून-व्यवस्था, यातायात संचालन, भीड़ प्रबंधन, आपात निकासी मार्ग, अवरोधक व्यवस्था, प्रकाश व्यवस्था, निगरानी कैमरों की उपलब्धता, अग्नि सुरक्षा, वाहन पार्किंग तथा श्रद्धालुओं की सुविधाओं का बिंदुवार परीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक आलोक शर्मा ने मार्ग पर चल रहे निर्माण एवं मरम्मत कार्यों का जायजा लेकर संबंधित विभागों को निर्धारित समय-सीमा में कार्य पूर्ण करने के निर्देश दिए। साथ ही जर्जर भवनों, विद्युत खंभों, लटकते विद्युत तारों, क्षतिग्रस्त सड़कों तथा संभावित अवरोधों का सूक्ष्म निरीक्षण कर आवश्यक सुधारात्मक कार्रवाई के निर्देश दिए गए। श्रद्धालुओं की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए सवारी मार्ग पर स्थित खुली नालियों को प्राथमिकता के आधार पर ढकने, श्री महाकालेश्वर मंदिर परिसर में लगे मधुमक्खियों के छत्तों को सुरक्षित हटाने तथा मंदिर परिसर एवं आसपास बंदरों की समस्या के निराकरण के लिए संबंधित विभागों को आवश्यक कार्रवाई सुनिश्चित करने के निर्देश भी दिए गए। निरीक्षण के दौरान चिन्हित कमियों एवं संभावित जोखिम वाले स्थलों का मौके पर ही परीक्षण कर संबंधित विभागों को तत्काल सुधार कार्य प्रारंभ करने तथा सवारी प्रारंभ होने से पहले सभी व्यवस्थाएं पूर्ण करने के निर्देश दिए गए। पुलिस अधिकारियों ने संवेदनशील स्थलों का भौतिक सत्यापन कर सुरक्षा प्रबंधों का भी मूल्यांकन किया।

वर्षा ऋतु में दूषित पानी से बढ़ता है संक्रामक बीमारियों का खतरा, सतर्क रहें नागरिक : डॉ. गेहलोद

विश्वनाथ समाचार न्यूज नेटवर्क

देपालपुर। बारिश का मौसम शुरू होते ही जलजनित एवं संक्रामक बीमारियों का खतरा बढ़ गया है। ऐसे में नागरिकों को स्वच्छता और सुरक्षित पेयजल के प्रति विशेष सावधानी बरतने की आवश्यकता है। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के प्रभारी डॉ. विजय गेहलोद ने बताया कि वर्षा ऋतु में दूषित पानी और अस्वच्छता के कारण टाइफाइड, पीलिया, हैजा, दस्त, कंजक्टिवाइटिस (आई फ्लू), मलेरिया और डेंगू जैसी बीमारियां तेजी से फैल सकती हैं। उन्होंने बताया कि भोजन बनाने एवं पीने के लिए हमेशा शुद्ध और उबले हुए पानी का उपयोग करें। भोजन करने से पहले तथा शौच के बाद साबुन से अच्छी तरह हाथ धोने की आदत अपनाएं। उन्होंने कहा कि स्वच्छ पेयजल की कमी के कारण जलजनित रोगों का खतरा बढ़ जाता है और बारिश के मौसम में यह समस्या अधिक गंभीर हो जाती है। दूषित पानी एवं अस्वच्छ आदतों के कारण दस्त, आंतों का संक्रमण, तेज बुखार, आंखों के संक्रमण तथा मच्छरों एवं मक्खियों से फैलने वाली बीमारियों का जोखिम बढ़ जाता है। डॉ. गेहलोद ने बताया कि दूषित पानी के कारण सबसे अधिक दस्त रोग फैलता है, जो बच्चों के लिए जानलेवा भी साबित हो सकता है। उन्होंने सलाह दी कि ताजा भोजन करें, सड़े-गले फल एवं खाद्य पदार्थों से बचें, खुले में शौच न करें, शौचालय का उपयोग करें तथा घर और आसपास साफ-सफाई बनाए रखें। दस्त होने पर चिकित्सक की सलाह अनुसार ओआरएस घोल एवं जिंक का सेवन करें। खाने-पीने की वस्तुओं को ढंककर रखें तथा फल एवं सब्जियों को उपयोग से पहले अच्छी तरह धोएं। उन्होंने बताया कि मानसून में कंजक्टिवाइटिस (आई फ्लू) का संक्रमण तेजी से फैलता है।

इंदौर में प्रशासनिक फेरबदल: देपालपुर, सांवेर और खुडैल को मिले नए एसडीएम, कलेक्टर शिवम वर्मा ने जारी किए आदेश

विश्वनाथ समाचार न्यूज नेटवर्क



इंदौर। प्रशासनिक व्यवस्था को और अधिक प्रभावी एवं सुचारु बनाने के उद्देश्य से कलेक्टर शिवम वर्मा ने जिले में उप जिला दंडाधिकारियों (एसडीएम) की नई पदस्थापना करते हुए महत्वपूर्ण प्रशासनिक फेरबदल किया है। लंबे समय से रिक्त पड़े देपालपुर, सांवेर और खुडैल एसडीएम पदों पर नई नियुक्तियां की गई हैं। इसके साथ ही कई अन्य एसडीएम को विभिन्न शाखाओं का अतिरिक्त प्रभार भी सौंपा गया है। जारी आदेश के अनुसार लोकेन्द्र सिंह सरल को राऊ एसडीएम, हरिशंकर विश्वकर्मा को सांवेर एसडीएम, चरणजीत सिंह हुड्डा को देपालपुर एसडीएम, राहुल गुप्ता को खुडैल एसडीएम तथा राजेश कुमार सिंह को हातोद एसडीएम नियुक्त किया गया है। कलेक्टर ने प्रशासनिक कार्यों में बेहतर समन्वय और जवाबदेही सुनिश्चित करने के उद्देश्य से अन्य अधिकारियों को भी नई जिम्मेदारियां सौंपी हैं।

केंद्रीय विद्यालय नहीं, नवोदय विद्यालय में दो छात्रों की मौत से मचा हड़कंप

विश्वनाथ समाचार न्यूज नेटवर्क

उज्जैन। घट्टिया थाना क्षेत्र स्थित जवाहर नवोदय विद्यालय में दो छात्रों की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत से क्षेत्र में सनसनी फैल गई। सोमवार-मंगलवार की दरमियानी रात हॉस्टल से लापता हुए दो छात्रों के शव मंगलवार को विद्यालय परिसर से सटे तालाब से बरामद किए गए। घटना के बाद विद्यालय की सुरक्षा व्यवस्था और प्रशासनिक लापरवाही को लेकर गंभीर सवाल खड़े हो गए हैं। पुलिस के अनुसार मृतकों की पहचान प्रज्ञान विमल (15) निवासी



कक्षा 10वीं तथा रोशन बरेठा (14) निवासी कक्षा 9वीं के रूप में हुई है। दोनों छात्र सोमवार रात हॉस्टल से अचानक गायब हो गए थे। सुबह कमरे में नहीं मिलने पर विद्यालय प्रबंधन में हड़कंप मच गया और तत्काल पुलिस को सूचना दी गई। सूचना मिलते ही थाना प्रभारी करण खोवाल, उपनिरीक्षक प्रवेश जाटव एवं पुलिस बल मौके पर पहुंचा। पुलिस ने छात्रों के साथियों से पूछताछ की तथा आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की जांच शुरू की, लेकिन देर रात तक दोनों का कोई सुराग नहीं मिल सका। मंगलवार सुबह करीब छह बजे विद्यालय की बाउंड्री से सटी डबरी (तालाब) में एक छात्र का शव तैरता हुआ दिखाई देने की सूचना मिली। ग्रामीणों की मदद से शव को बाहर निकाला गया, जिसकी पहचान प्रज्ञान विमल के रूप में हुई। इसके बाद पुलिस, एसडीआरएफ और स्थानीय गोताखोरों की टीमों ने तालाब एवं आसपास के क्षेत्र में सघन सर्च ऑपरेशन चलाया। क

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं प्रधान संपादक : संदीप परमार द्वारा 106, लीला रेसीडेंसी कॉलोनी, वार्ड क्रमांक 07, देपालपुर, जिला इंदौर (म.प्र.) से प्रकाशित तथा उदयरत्न ऑफसेट, 170/2, दारू गोदाम के आगे, आगर रोड, उज्जैन (म.प्र.) से मुद्रित। स्थानीय संपादक : सनातन दग्दी (मो. 9179111917), संपादकीय सहयोग : उत्कर्ष जैन (मो. 9039315000)। स्थानीय कार्यालय : 215, सोमानी नगर, एयरपोर्ट 60 फीट रोड, इंदौर (म.प्र.)। आर.एन.आई. पंजीयन क्रमांक : MPHIN/25/4357। (सभी प्रकार के विवादों का क्षेत्राधिकार इंदौर न्यायालय रहेगा।), (नोट: पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए उत्तरदायी)